शिक्षक दिवस

१९७३

जूनां बेली : नुवां बेली

सम्पादक :

शिवरतन थानवी

पुरुषोत्तम तिवारी

चिन्मय प्रकाशन

शिक्षा विभाग राजस्थान के लिए
शिक्षक दिवस १९७३ के अवसर पर
चिन्मय प्रकाशन
चौड़ा रास्ता, जयपुर-३
द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण
मूल्य ५.७५

आवरण
पारस भंसाली

मुद्रक :
श्री कृष्णदेव शिवराम
[illegible]
[illegible]

आमुख

राष्ट्र निर्माण के कार्यों में शिक्षक की भूमिका निर्विवाद है। समाज शिक्षक के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करने की दृष्टि से प्रति वर्ष **शिक्षक-दिवस** का आयोजन करता है।

शिक्षा विभाग, राजस्थान इस अवसर शिक्षकों का सम्मान कर उन्हें राज्य स्तर पर पुरस्कृत करता है और उनके कार्यकारी जीवन के सृजनशील क्षणों को संकलनों के रूप में प्रकाशित करता है।

इन संकलनों में शिक्षकों की क्रियाशील अनुभूतियाँ, साहित्य-सर्जना के अखिल भारतीय प्रवाह में उनकी संवेदनशीलता तथा उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक समकालीनता के स्वर मुखरित होते हैं और उन्हें यहाँ एकस्थ रूप में देखा और पढ़ा जा सकता है।

सन् १६६७ से विभागीय प्रवर्तन द्वारा सृजनशील शिक्षकों की रचनाओं के प्रकाशन का जो उपक्रम **एक** संग्रह के प्रकाशन से आरम्भ किया गया था, वह अब प्रति वर्ष **पाँच** प्रकाशनों की सीमा तक पहुँचा है। प्रसन्नता की बात है कि भारत-भर में इस अनूठी प्रकाशन-योजना का स्वागत हुआ है और उससे सृजनशील शिक्षकों की अभिरुचियों को प्रखरतर होने की प्रेरणा मिली है।

सन् १६७२ तक इस प्रकाशन-क्रम में २२ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और उस माला में इस वर्ष ये पांच प्रकाशन और सम्मिलित किए जा रहे हैं :

१. खिलखिलाता गुलमोहर	(कहानी—संग्रह)
२. धूप के पखेरू	(कविता—संग्रह)
३. रेजगारी का रोजगार	(रंगमंचीय एकांकी—संग्रह)
४. अस्तित्व की खोज	(विविध रचना—संग्रह)
५. जूनां वेली : नुवां बेली	(राजस्थानी रचना—संग्रह)

राजस्थान के उत्साही प्रकाशकों ने इस योजना में आरम्भ से ही पूरा-पूरा सहयोग किया है। इसी प्रकार शिक्षकों ने भी अपनी रचनाएँ भेज कर विभाग को सहयोग प्रदान किया है। इसके लिए लेखक तथा प्रकाशक दोनों ही धन्यवाद के पात्र हैं।

आशा है, ये प्रकाशन लोकप्रिय होंगे और सृजनशील शिक्षक अधिकाधिक संख्या में अगले प्रकाशनों के सहयोगी बनेंगे।

बीकानेर
शिक्षक दिवस, १६७३

निदेशक
र० सि० कुम्मट

अनुक्रम

कहानियाँ

कविताएँ

राजस्थानी कहानियाँ

अकाल ऊपरलो काल

रघुनाथसिंह

दिन विसूजग्यो हो। अंधेरै माय सगली चीजां धुधली धुधली दिखण लाग ग्री ही। कालू आपरी गुवाड़ी मं धूणी बाल'र बैठो ही ज हो कै इतणै मं ही बारणै ड़तो रामू बोल्यो, "काका ! कांई कररयो है ?"

"कांई कररयो हूं मौत सूं लडरयो हूं। पण दिसै है मौत छोड़सी कोनी।' ालू धूणी रै फूंक मारतो बोल्यो।

"काका ! घबराणै सूं कांई होवै ? भगवान पर भरोसो राख अर थ्यावस अ । मौत रा दिन वेगा हीज निकल ज्यासी।"

"भगवान रो तो भरोसो है ही रामू ! बिना भगवान तो दुनियां पर कुण टक सके है। पण थ्यावस कठै तांई करां ! तू जाणै है बान निमड्या तो मूदत होयगी, चार मींना पैली तांई तो मिणत मजूरी चाली, जिणसूं टाबरी पाली अर पाछै रोई सूं भूरट लाय लाय' र टाबरां रै पेटो मं गेरो। लोगां री लूट आगै कोई कांई रुक सकै ? भूरट भी सामडीज ग्यो तो ऊंटां रो खाज लाणो हीज लाय लाय ांवरां रो पेट भरूं, पण यो काल ही कै महाकाल सूं भी बडो कोई काल है। लाणो भी सामडीजग्यो। अब लाणो भी कोनी मिलै। तू ईं बता अब कियां पार पड़ै ? धान रै दुःख रै साथै साथै पाणी रो भी घणो दुःख। पाणी भी नेड़ै मिलै कोनी। बो भी दो दो कोस सूं लाणो पड़ै। मिनखां री आ हालत है, जानवरां री तो बात ईं के ? वै तो घणखरां सा' क गैलड़ी गेल्या जाता रैया। बस दो एक गावड़्यां बची ही, उण नै खुवावण वास्तै अब कीं कोनी। दो दिन पैला उणरो भी जेवड़ो काढ दियो। घणो ही ज दुख होयो पण कांई करूं ? गऊ री जाया रो भूखो मरणो कियां देख सकूं। जितणा दिन उण रो पेट भर सक्यो, राखी अब उण रो पेट नीं भर सक्यो तो भगवान रै भरोसै छोड़ दियी।" कालू आखयां मं पाणी भरतो बोल्यो।

"काका ! काल् मौत रो ही नांव है पण दोरो सोरो काढ़णो ही पड़सी। थांरी तो झूंपड़ी भी टूटग्यो अर वाड़ घणी जूनी होयगी। लारलै दो तीन वरसां सूं करी नीं दिसै ? मांचा भी सै टूटग्या। यो देख एक मांचै रो पायों तो टूट ग्यो ही दिसै है। जट री जेवड़ीं सूं बांध' र काम चलारयो है ?" रामू हाथ तपातो बोल्यो।

"हां भाई ! लारलै चार वरसां सूं काल आपरो रंग दिखा र्‌यो है, तनै कै ठा कोनी ? झूंपड़ी बिचारी बूढीजग्यी। गुवाड़ी री वाड़ क्यां सूं करतों भींटका नै वेच 'र तो पेट मं खायग्या। पेट री आग आगै मांचा री सुध कितै आवै ही ? लारलै केई मींना सूं एक ही ज जूण रोटी मिलै अर अब तो लाणो अर भूरट भी निमड़ग्यो, खावण नै कीं कोनी।" कालू चिलम झाड़तो बोल्यो।

"काका एक दो दिन मं फेमन रो काम चाल ज्यासी। मैं तनै काम पर लगा देस्यूं अर काकी नै भी सागै ही काम पर ले आये।"

"म्हांरै तो दिन उगता ही ज मुसकल मंड जासी। घरां धान रो दाणो ही ज नीं है, मजूरी भी मिलै कोनी भगवान रै भरोसै ही ज रात काटस्यां। ओ फिमन रो काम कद तांई चालसी रामू ? सुणां हां, बड़ा बड़ा मिनस्टर केवै है किण नै भी मरण नीं देस्या। वै बंगला माथै वैठा ही रोला करै है। चुनावां मं तो आठै पटरोल फूंक फूंक' र घाणा घाल दिन्या अब कठै निजर भी नीं आवे हैं। पिरजा तो भूख सूं तड़फ र्‌यी है अर वै बंगला वैठ्यां ही रेड़ियां मं बोलै है किण नैं मरण नीं देवांला पण सुण रामू ! पं, ली मरस्या कोनी, मरस्या तो उणनै मार' र मरस्या।" कालू थोड़ो उगस' र जोर री आवाज मं कैयी।" फेमन री बात चालता चालता दो मीं' ना होयग्या अर अब तांई काम शुरू होयो नीं।"

"अब दो' एक दिन में चालू हो जासी।"
"चोखो भाई, लोगा नै मजूरी मिलस्यी।"
"आछ्यो काका, उमार हो रयी है। मैं चालू हूँ।"
"चोखो भाई, म्हारों ध्यान राखजै।"

× × × ×

फिमन रो काम चालू होयग्यो। गांव रै आथूणं पासै जोड़ो खूदण लागग्यो। कालू अर उणरी घरहाली दोन्यूं काम पर लागग्या। सैकड़ां लोग और भी काम पर लागर्‌या हा। केई मिनख जोड़ै नै खोदता अर केई मिनख कुण्डी भर भर' र बारै

पाल पर नाखता । कालू कुण्डी भर भर नाखतो जातो अर बात करतो जातो । बातां ही बातां में बो लोगां सूं कैवतो "भाई ! जो आपणो ही ज काम है, आपणों जोड़ो खुद ज्यासी, इन्दर राजी होसी, बादलियां बर्रासी अर मेंह बरससी । जोड़ो भर जासी अर आपां नै कितणो आराम होसी । मन लगाय' र काम करो ।"

मटकू बोल्यो" काका ! सरकार रो काम है इयां हीज चालसी, आला सूखा सैं बलसी. कोई बाकी नीं रै सी । मर मिटैलो उण नै हीज बा' ई मजूरी मिलसी जो दूजां नै मिलसी । मरणं सूं कांई लाभ कोनी ।

"थांरी मरजी भाई, पण जीतणा पीसा लो उतणो काम तो करणो ही ज चाइजै ।"

लखा बोल्यो—"आ सीख थारै कनै ही राख ।"

"चोखो भाई ।" कालू कै' र आपरै काम पर जुट्यो रै' यो । उणरी बातां रो कालू पर कांई असर नी पड्यो । दोन्यूं जणां पूरै मन सूं काम करता रै' या ।

छठै दिन जद कालू अर उणरी घरहाली जिणरो नाम सोनी हो काम सूं घर लोट्या तो देखी कै उणरी दस बरस री छोरी रूाली ताप में मूंकडै है । सोनी छोरी री हालत देखता हीज ठण्डी होयगी अर आपरै धणी नै कै'यो "छोरी ताप में मूंकड़ै है कांई करां ?"

"कांई करां पैइसो कनै एक कोनी । वेद तो जाता ई पैइसा मांगसी, तड़कै तो हफतो चुकसी तो कीं वापरसी, पण अब कांई करां ?" काल या कै' र केई जणां कनै पैइसा वास्तै गयो पण सगला नटगया । देवै भी कठै सूं ?, काल सैं नै मार नाख्यो हो ।

रात बड़ी मुसकल सूं आख्यां में नींद काढ' र काटी । दिनूगै पै, ली कानू फिमन रै सुपरवाइजर कनै भाज्यो भाज्यो गयो अर आपगो दुखड़ो रोयो ।

"मैं बिना हिसाब एक पैइसो भी नीं दे सकूं ।" कै'बतो सुपरवाइजर साफ साफ नटग्यो ।

कानू फेरू अरज करी "सा' ब एक ही ज छोरी है उणरो मुखड़ो देख ही ज जीवां हा । तारलै दिनां एक छोरी तो चालती रै' यी अब या भी भगवान री प्यारी होगी तो म्हारो कांई हाल होसी ?" कैवता कैवता कानू री आंख्यां में पाणी चिलकण लागग्यो ।

"छोरियां रो कांई घाटो है, एक म्हारली ले लीजै ।" सुपरवाइजर मजा री मूढ़ मं बोल्यो ।

"साव आप मजाक करो हो, म्हारै जान री लाग र्‌यी है ।"

"तो जा, पैइसा तो संझ्यां ही मिलसी । आ कोई वाणिये री दूकान कोनी पैइसा हिसाव सूं मिलसी ।"

कालू मुंह लटकांवतो आयग्यों, कांई जोर। घरां आ' र सोनी नैं बोल्यो, तू रूपली कनै हीज रह । मैं एकलो ही काम पर जास्यूं । दुष्टां मजूरी भी दी गोली गुटकों क्यासूं लाऊं ? संझ्या मजूरी मिलसी जद ल्यासूं पण या सूं भी घणी बीमार है, आथण पकड़ीसी भी-'क नी ।" कालू री आख्यां म भर आयो पर मन न ध्यावस देय रै काम पर आयग्यो ।

संझ्या रै सैं लोग मजूरी लेवण वास्तै भेला हुआ । सगला रा गूंठा अर हाजरी वताई तो कालू वैठ्यो ही वोल्यो आ कांई वात है म्हारी पांच ही कियां है ? सात दिन काम पर पूरो आयो हूँ । लेखूड़ो काम पर दो ई दिन हो उणरी भी पाँच ? या के धाधली है ?"

"ठै' र काका ! रोला क्यूं करै ! तनै सै वता देस्यू" रामू वोल्यो ।

"यो गुवार कुण है ? इयाकलै नै काम पर नीं लाणो हो, सारी पोल देसी ।" सुपरवाइजर रामू मूं धीरै सी कैयो ।

"मैं समझा देस्यू सुपरवाइजर साहव, कोनी करसी ।" हफतो चुकावण ल तो कालू वोल्यो "सरकार जिस्या ही उणरा मुजारा । सैं रै खावण री वास्ते रयी है । मैं तो पूरी सात दिन री मजूरी लेस्यू ।" कालू ई धाधली में छोरी बीमारी नैं ही ज भूल र्‌यो हो ।

सुपरवाइजर-जोर सूं वोलो "रोला क्यूं करै है, थांरी पूरी मजूरी ही देस्य पैली ओरां नै तो सलटाण दे,पाछै आपणो सलटावो करस्या । थोड़ो ध्यावस राख वात सुण' र कालू एक कानी वैठग्यो । वैठ्या वैठ्या छोरी री याद आई अर सोच लाग्यो, दुष्ट उमार कर र्‌या है । जे वा जीवती नीं मिली तो ? दुष्टां रो मुंह वाल जे पांच दिनां री ही ज मजूरी ले ल्यावतो तो छोरी री दवा दारू करतो । कदे राखस म्हाँरी पूरी मजूरी ही नीं गिट जावैं । इयाँ सोचता सोचता जद उण विचारां रो तांतो टूट्यो जद तक सारा मजूर मजूरी लेय गेलै लाग्या ।

कालू वोल्यो, -"लाओ सा'व अव तो दो म्हाँरी मजूरी ।" सुपरवाइजर वो "किसी मजूरी ? म्हें तो चुकादी, ओ देख थांरो गूंठो है ।" सुण र कालू रा ह

उडग्या अर बोल्यो—"सा'व इयाँ क्यूँ लाकँ लगाग्रो हो ? गूंठो तो यो रामूड़ो पैली ही ज करा लियो हो। म्हाँरी मजूरी दी कोनी, चाहे इनैं पूछलो। पण रामू रो काम तो सुपरवाइजर री हाँ मं हाँ मिलाया चालै हो सो वो जीवती माखी गिटग्यो अर बोलो, काका ! भूँठ क्यूं बोले मजूरी तो तनैं सात दिन री दे दी।

"अरे, भगवान ? थांरै राज मैं यो कांई इन्याय हो र्‌यो है चोर तो रात नै चोरी करै अर ये धोलै धोफारां ही ज लुट र्‌या है ।" कालू भगवान री ओर हाथ जोड़तो बोल्यो।

"थांरो न्याय भगवान ही करसी।" कैवतो सुपरवाइजर चाल पड़यो अर पाछै पाछै रामूड़ो।

कालू गाल काढतो आपरै घरां आयो तो ठा पड्यो क' छोरी आखरी सांस गिण र्‌यी है। कालू सोची छोरी बचै कोनी। लुटेरा मजूरी भी कोनी दी।

" बोलो बेटी रूपी ! बोल तो सरी। मेरी बेटी रै कांई हुयग्यो।" बाप री बाणी सुण' र' रूपी आंख खोली. थोड़ी मुलकी अर आख्यां उठै री उठै रै गी। सोनी अर कालू दोन्यूं रो पड्या "बेटी चाली रे ! बे·······टी·······चा·······ली·······रे।" अर क्षण में ही बेटी रा प्राण पखेरू उड़ग्या।

एक रात सुपरवाइजर अर रामू बैठ्या बैठ्या दारू पीवै हा। सुपरवाइजर बोल्यो—"आपणो के बिगाड़ सकै है ! कलियो अड्यो तो छोरी मरग्यी पण बीं री ऐंठ गई कोनी। इब भी वो आपां नै गाल्या बकै अर आपणै खिलाफ परचार करै, घणो बदमास है।"

"हाँ सा' व ! सुणी है वो आज घरां कोनी।"

"उण री रांड तो है।"सुपरवाइजर गुटकियो लेतो बोल्यो।

"हाँ, सा'व वा तो अठै ही है" बात करतां करतां दोन्यां री अकल पर पथर पड्या अर बै कालू रै घरां पूगग्या। अर आधी रात न सोनी री झूपड़ी रा किवाड़ खड़ खड़ाया। सोनी समझग्यी, किवाड़ खोल्या कोनी। पण मामूली सा किवाड़िया हा, जोर देता ही टूटग्या। सुपरवाइजर माय बड़ग्यो। सोनी झट खड़ी होयग्यी। पैली तो पंइसा रो लोभ देय रै सुपरवाइजर सोनी नै भुलाई पण काम चालो कोनी तो जोरा मर्दी दोन्या उण री मरजाद बिगाड़ नाखी, आपरी खवास पूरी करी अर वठै गे भाजग्या।

कालू दूजे दिन संध्या रै घर आयो तो गाँव मं चर्चा जोर पकड़ राखी ही। कालू नै ई बात रो टा पड्यो तो हक बको होग्यी। बींरो दुखड़ो भगवान पर टूट

पड्यो । बोलो, थांरै देखतां देखतां म्हारी लुगाई री मरजाद विगड़ै तो अब जीणो धिरकार है मरणो ही ज चोखो । हाय राम अब मैं गांव नै किया मुंह दिखाऊँ ।"

इण वात रो कालू पर इतणो असर हुयो कै वो दुख रै माय घर सूं निकलग्यो अर गाँव सूं वां रै एक कुँए कनै पूग्यो अर आख्या मींच रै झट कुँअे माय पड़ग्यो अर घणै जोर रो खुड़को हुयो ।

गांव में कालू री आत्महत्या री वात फैलग्यी । लोगां री जवानां पर आ वात चाल र्यी ही कै हद होयगी, इण सूं वड़ी कांई बात होसी ? धान रै काल सूं तो कियां दोरा सोरा दिन काढ र्या हा पण अै दुष्ट जो इयां लुगायां री मरजाद विगाड़ै यो वी काल सूं भी मोटो काल है । इण काल सूं वचणै रो उपाय कोनी । इयां आपणो समाज दो कालां रै वीच पीसीजतो जा र्यो है ।

——

सूकेड़ा आंसू

मोहनसिंह

तीन साल पैलां मूलो गांव री गुवाड़ी छोड़'र आपरै खेत मांय बसगो हो । क्यूं जगां री सांकड़ेलो, क्यूं पड़ोस्यां री कुचरणी अर क्यूं रोज-रोज रो ओलमो । तंग आयर मूलै खेत मांय एक झूंपो बांध्यो । ओ झूंपो ही मूलै रो घर हो । गांव हाला ई नैं मूलै री ढाणी कैवता । कई दिनां ताणी तो बै मसखरी कर्या करता कै ईं खेत मैं मूलो कांई कांई करैलो ? चार बीघा टुकड़ो है, बसैगो कै दाणां बावैगो ।

मूलै रो गुजारो खेती रै पाण कांनी होवतो । बै मजूरी करता । सूंडियो दो रिपियां सूं ले'र चवन्नी ताणी री मजूरी लियावतो । सूंडियै री मां रैणी कैणी री लुगाई ही । पाड़ोसण्यां बीं री बात मान्या करती । बात आ ही कै वा कोई नैं काम ताणी नट्या कोनी करती । कोई कै गोबर-भारी कर देवती, कोई की करस ल्या देती अर कोई रो पीसणो पीस देती । लुगायां बीनैं छाछ घाल देती अर कदै कदै सीली बासी रोटी भी दे देवती ।

घर मैं ईन मीन तीन पराणी हा । ठंडी बासी खायर आपरो काम चलावै हा । जिनगानी रा दिन पूरा करै हा ।

बावड़ली साल काल् रै धक्कै अेसा चढ्या कै खावै नै कुत्ता खीर । सेखावटी रै काल् रो कांई कैवणो । रूंखा री आब काल् रै साथै मांटी मैं लुक जावै है । मोटा-मोटा किरसा री पोल् चोड़ै आ जावै है । अेसो ही काल् ईंवार अठै पड़यो । काल् रै आगै नीगा चोखा आदम्यां धीरज छोड़ दियो । विचारै मूलै री कांई ओकात ही जो टाणो ढंढलो । वां री जोड़ायत धापां स्याणी लुगाई ही पण काल मांय स्याणप चालै कोनी । घर मांय खावण ताणी नाज कोनी हो । मजूरी मिली कोनी । धापां गांव मांय जावती अर छाछ री हांडी भरा'र ले आवती । सिंज्या नै दो मुट्ठी बाजरो कूट'र छाछ मांय गेरती अर राबड़ी बणा लेवती । बा ही राबड़ी दोन्यूं बगतां खा लेवता ।

लोगां री हालत अर घणी खराब होवण लागगी तो कठे कठे राज री तरफ सूं सड़कां पर मांटी नाखण रो काम चालू होवण लाग्यो । पण ईं गांव रै ओड़ै नेड़ै तो ओ भी कोनी हुयो हो । गांव रै मातबर आदम्यां नै फे'र सूं डिगे नै कुलोद भिजवायो । जठै सूरीजेड़ी ढाब खुदण रो काम चालू कियो हो । आरी पारी रा कई जणा उठै पैलां सूं काम पर लाग रिया हा ।

आज रै साथ साथ पूरा-पावड़ा भी बिके लागग्यो हो । गाय-भैस्यां री मुसकिल होवण लागगी । कुण हाल्या ढांगरां नै टरकां मांय भरीज भरीज'र लोग जैपर लेजावण लागग्या जठै अठमाड़ी लागै है । जैपर रै अठमाड़ै मांय सेखावाटी री गाय भैंस मोकळी रै मोल बिकण लागी । अठीनै गांवां मांय रवादक रो तोड़ो पड़न लाग्यो । भाभा आज भी मोल मांग जोवती पण बीनै रवादक कम मिलण लागगी । दो चार जणां सूं आज मांग्यो पण पार कोनी पड़ी । ओक बीरी पड़ोसण जीनै आ घणो काम भार्या करती ओक दिन सेर बाजरो दियो हो ।

मूलो साठो हलग्यो हो अर भाभा साठी मांय खाल री ही । मूला री मारेड़ी आ भूकी-सी लागती अर मूलै रो कळ्यूं मैगे भूकीजेड़ो हो ।

भाभा सोची मिनख पर बिपदा आंवती रै वै है । सेर बाजरै सूं पांच सात दिन कट ज्यासी । इतणै मांय सूं डियो बणू तो लै'र आसी । रोजीना न मिलसी तो भी इतावरै पाम आस सेर रवादक मिल्यां करस्यां । आ सोच आ मूलै नै रोज दो रोटी बणा'र देवण लागगी । कदे कदे आ खुद भूखी ही सोवण लागगी । राबड़ी बणती होवती तो सा को सा घणी नै पाल देती ।

मूलो सारै दिन भूखू को तड़िया रैवण लागग्यो । आगै आवण हाला दिन बीनै ओल कारड़ा दीसण लागग्या । अठीनै भाभा भारी सोच रै भूखी रैवण लागगी । पर बी घणी नै भूखो देखण री औकात बीं मांय कोनी ही ।

सूं डियो काम पर तो लाग गयो हो पण राज हाळा मजूरां नै मजूरी कोनी दी ही । वो अठै ही रैवण लागग्यो अर ओक हाट सूं नाज-पाणी लेलेवतो । घरै कानी सूं बीनै घणो ही सोच हो पण बिचारै को बस कोनी हो ।

दस दिन निकलग्या । ओक सेर बाजरै पाण भाभा मूलै रै पेट री लाग, दस दिनां ताणी रोकती री । खुद रै सरीर मैं जान कोनी बची ही । मांय मांय आणो-जाणो छूट्यो हो । आगै जामैं कैयां, भाखण री हिम्मत तो ही कोनी ।

आखै गांव नै ठा पड़ग्यो कै बापो मांदी पड़ी है अर सुन्दै रै घरां अन्न रो दाणो ई कोनी। कई लुगायां मिलण नाई उणा कनै गई। कोई रोटी लेयनै गई अर कोई थोड़ो घणो बाजरो पल्लै रै बांध सागै लेयनै गई। बापो रै सिराणै ओक बाड़ियो पड़ियो हो। वां सगळी उण्मां लिजाड़्यो बाजरो बाड़िये माय नाख दियो अर बापो सूं संवेदना करीजण लागी। बापो रो पेट पताळ जा रियो हो। बोली हकला री ही। बोलण नै बोली तो सब पण बोली होळै कैयां बोलण सकै ही। वै थोड़ी घणी बार ठैर'र सुनि नामाई।

गांव री लुगायां रै जाणै रै बाद सुन्दो आयो। म्हाट कनै री पीढै पर बैठग्यो अर ओक टक मां निजर्‍यां सूं देखण।

"अब के हाल है?"

"नीका हूं।"

"थनै नवता कर ज्यावै।"

वा सिराणै सूं बाजरै री ओक रोटी निकाळी अर सुन्दै नै देदी।

रोटी देख'र सुन्दै री जान मांय जान आई। बेगो सो रोटी लेर खावण लाग्यो। रोटी खावण लाग्यो ही ओक खोटो दियो। काया निरधन होगी। वां नै के ठा ही कै वा भूख सूं मरी जावती ही। वो तो जाणै हो कै वा मान्दाई मांय पड़ी ही मांदगी सूं।

वा मैं कई खातो लाग्यो जद वो पूछ्यो—"तूं खाई कै ना?"

"मैंनै भूख कोनी।" अर फेर बोली, "म्हारै सिराणै बाड़िये मांय बाजरो पड्यो है। तूं दियो आंवती बगत कदू न कदू म्हाय लेयर आसी। थोडली कनै सूं आछ लिखाया करियो। वो नै थोड़ो थोड़ो बाजरो कूट कूट'र नाख दिया करियो। मोटो बगत है निरभ उबैलो।"

सुन्दो मा री बात सुणी तो घणो दुख्यो। बोल्यो—"मा के कैवै है? थनै रो हूं'र करै?"

"घबराई मत। थारो साथ भोरम्यो दिन्या हुसी। सेत मेत निरजैला।" कैयती कैयती मा री आंख मीच लाग्यो।

दूजै दिन दस बजे रो वगत हो। गांव रा पनरा वीस मिनख मूलै री झोंपड़ी रै सामैं धापां री अरथी जचा रिया हा। अरथी सजा दी गई ही। वींरै पुराणें ओडणैं रो कफन वीनैं उढा दियो गयो। ओडणों पुराणो हो। वो जगां जगां सूं फाटण लाग्यो। मूलै सूं कोनी देख्यो गयो। झोंपड़ी रै लारनैं पूंच्यो अर आपरी आधी धोती फाड़र ले आयो अर आंवतां पाण वीं धोती नैं वीं री अरथी पर नाखदी।

लोगां देख्यो। आखरी वगत भी वा पड़दै सूं जावै ही। मूलै भोत कोसीस करी। वो जोर जोर सूं फूट फूट रोवणो चावै हो पण रो ना सक्यो क्यूं कै आंसू सूकीजगा हा।



कुणाल

ऐतिहासिक कहाणी

गोपाल राजस्थानी

भारत रै इतयास में असोक एक महान् सासक व्हिया है. इतयास रै पानां में उणां जैड़ी वीरताई, बल-विकरम अर तेज दूजै किणीं भी राजा में नहीं हुतो, पैल उणमें राज विस्तार री बहोत भूख ही, उण कलिंग माथै भारी चढ़ाई करदी, इण जुद्ध में दोनां कांनला अणगण सैनिक काल् रै जबड़ां में पौंचग्या, नैंना अनाथ व्हैग्या, हजारों लुगाइयां विधवायां हुयगी । बुद्ध भिखु उपगुप्त रैं मुजब असोक जद रणखेतां में पौंच्या तो धरती नैं लोई सूं तर देखी, कठैई धड़, कठैई सीस तो कठैई फौजियां रा हाथ-पग बिखरोड़ा पड़्या हा अर वांपै नरभाखी जिनावरां री गिद्ध मचियोड़ी ही । सैनिकां नैं चिरलाटियां कुरलाट करता देख' र असोक रै हिरदै में उथलपुथल मचगी अर उण नै अपणें आप सूं घृण अर घिरणा आयगी ।

इण दरसाव रै बाद असोक बुद्ध धरम नैं अंगीकार कर्‌यो सत-अहिंसा अर बुद्धधरम में अपणीं सगली सगति लगाय दी, जिण असोक रै मन में राज री कांकड़ रै पसराव री भावना ही वोईज असोक पछै धरम री सींवा रै फैलाव में लागग्यो अर उवै बुद्ध धरम रो प्रचार जावा, सुमातरा, लंका, स्याम बोरनियो अर चींण देस तांई करायो ।

असोक री बड़ी राणीं रो राजकुमार-कुणाल, फूठरैपण री परतख सूरती हो । उणरी आंख्यां इती फूठरी ही कै उण समै सायत ईज किणी दूजै री व्है । कुणाल विद्या रो भी सांचो उपासक हो, राग-रागणियां, ताल-लय में उवै वगत उणरी बिरोबरी रो बीजो गवैयो कोनी हो । उदैरी घरवाळी कंचणा भी उवै जैड़ी' र जैड़ी रूपावती, हिरणां नीं ही ।

सौतल माँ तक्सरक्सिता कारणवस कुणाल सूँ रूसीजोड़ी ही, वो हर वगत उणरौ बिगाड़ करण रै मौकै री चैस्टा में रैवंती ।

कुदर ग्रैड़ी करी कै तक्ससिला रै राजा साथै पड़ौसी राजा हमलो कर दीनों, दुस्मण सूं ग्रपणी रूखाल रै खातर तक्ससिला नरेस महाराज ग्रसोक सूं मदत मांगी ग्रर घुड़सवार साथै समाचार करा दिया । ग्रसोक उण कागद रै बारै में राणीं तक्ससिला सूं स'ला करी, वो तो पैल सूं ईं कुणाल पैं खार खाधोड़ी बैठी ही, उण नै ग्रवसर मिलग्यो । उण ग्रसोक नैं कयो "तक्ससिला री सायता र खातर कुणाल नैं भेज दिरावो, वो भी रणभोम रौ कीं तुजरबो कर ग्रावैला । एक राजा रै वेटै नैं जुद्ध विगर जीवण रौ ग्रसली तुजरबौ नहीं हुय सकै ।

राणीं री चाल चल पड़ी, ग्रसोक उणरी राय मानली ग्रर तक्ससिला रै रोलै नैं निपटावण सारूं उणरै राजा री मदत रै खातर, कुणाल नैं भारी कटकल समेत भेज दियो ।

वाप ग्रर राजा ग्रसोक रौ हुकम सिर माथै धारण कर नैं कुणाल तक्ससिला कानीं वईर ह्विया ग्रर ग्ररधंगा कंचण भी उणरै साथै चली गई ।

कुणाल रै वईर हुवण रै थोड़ा दिन वाद ईज महाराज ग्रसोक कांतरा व्हईग्या । उणरै पेट ग्रर माथां में दरद हुयग्यो, जीवण रौ कोई भरोसो कोनी रियो, केई वैद, हकीम, बुलाइजिया पण इलाज लागू कोनीं कियो । जणें राणीं तक्सरक्सिता खुद उणरी मांदगी रौ निदान करयो ग्रर रोगाणुग्रां पै टोटको कियो । जकैसूं वो ईं नतीजै पै पौंची कै मांदगी रा कीड़ा लसण रै रस सूं मरजावै है ग्रर राणीं ग्रसोक नैं दवाई रै रूपमें लसण घोट-घोट'र पावणों सरू कर्यो जिणरै फलसरूप रोगाणूं मरग्या, ग्रर महाराज ग्रसोक री तवीत सुधारै पै ग्रायगी, उणरौ जी सोरौ व्हईग्यो । ग्रसोक, तक्सरक्सिता री टेल-चाकरी सूं वहौत राजी हुया ग्रर राणीं नै मन चाई चीज देवण रौ वाचौ दियो

राणीं कियो -"महाराज ! ग्राप इतै वड़ै देस रौ राज किया चलावो ? ग्रर इत्ती वड़ी जवावदारी किण तरै निभणी में ग्रावै है ? हूँ राज भार री ईं जवाबदारी रौ तुजरवौ करणौं चावूं इण कारण ग्राप म्हनै एक दिन रै खातर राजसत्ता सूंप दो । वादै रै मुजव ग्रसोक उण नैं एक दिन रै खातर सत्ता संभलाय दी ।

राजरी सत्ता हाथों में ग्रावंतापांण तक्सरक्सिता राज री मौर छाप लगाय नैं एक कागद तक्ससिला रै राजा नै लिख दियो ।

"कुणाल देस रो वहोत वड़ो गुनों करयो है। इण कारण उवैरी दोनूं आख्यां फोड़' र उणनैं देस री कांकड़ सूं काढ' र देस निकालो दे दियो जावै।"

तक्ससिला नरेश असोक री राज-मोर छाप आलो कागद देख्यो पण उणरी आंख्यां कुणाल री सरीफाई अर फूठरी मूरत देख' र विस्वास कोनीं कर्यो, उण मन में सोच्यो आ कागद सरासर फरजी है। कुणाल कोई भी अैड़ो अपराध करै जैड़ो मिनख कोनीं। उणीं समैं उण जाय नैं कुणाल नैं सगली विगत कैय सुणाई अर अपणीं राय जायर करी कै औ कागद हराल खोटो है, हूँ तो ईं नै मानण नैं त्यार कोनीं।

महाराज, असोक म्हारा जामीं ! उण रो हुकम नहीं मानणों आ गद्दारी अर अनीति है। इण कारण हूँ कैयं हूँ कै इण माथै पाटलिपुत्र री मोरछाप लाग्योड़ी है इण कारण राज रो हुकम बजावणों आपणों धरम है। ये जे आग्या पालण नहीं करोला तो आ बेजा वात व्हैला, इण कारण हूँ आप नैं कैवूं हुं कै ये म्हारी आंख्यां फोड़ाय' र मन्नें जावण दो, अर हूँ अवार बईर हुय जावूंला।

कुणाल उणीं ज वगत अपणीं आंख्यां में लोखण रा तपियोड़ा ताकला खोय दिया अर अरधंगा कंचणा समेत देस निकालै रै खातर वईर व्हैईग्यो।

कंठ उणरो सुरीलो हो ईज, हर जगा संगीत कला रै कारण उवैरी खूब आव भगत हुवंती। घूमतो-भटकतो अचेतै में, केई वरसां रै वाद एक दिन पाछो पाटलि-पुतर पोंच्यो अर गावंतो-वजावंतो राजरी गजसाला रै सरदार खनैं जा पोंच्यो।

सरदार इण मूरदास जोड़ै री रागणीं पै मोईत हुयग्यो अर उण कुणाल-कंचण री खूब आदर-सत्कार कर्यो वांनैं आसरो दियो।

कुणाल-कंचण समेत गजशाला पें रातीपासो लियो अर पीलैंक वादल री वेला, भैरवी राग री ताण छेड़दी। उण वगत महाराज असोक ध्यान लगावैं हा। उण आ जाणी-पिचाणी-मधुरी राग सुणीं तो उणांरै हरदै कमल में अनुराग. अर जिग्यासा ऊनी कै ओ गवैयो कुण है?

एक चोबदार नै बुलवाय र असोक उण गवैयै नैं सवार रा हाजर करण रो हुकम दियो। सूरज उगनापांण दरवाण गजशाला कानीं ग्यो अर कुणाल नैं कंचणा समेत असोक रै दरबार में हाजर कर्यो।

म्हूँ थांरी संगीत कला रै अभ्यास सूं घणों राजी हूँ। थांरौ परिचय बताओ, असोक कुणाल नैं पूछ्यो कारण कै इण सूरदास री हालत में दोनां नैं कोई कोनीं ओलख सक्या।

महाराज ! हूँ तौ बुद्धभिखु हूँ अर अै भिखुणी है म्हारी जोड़ायत।

पण इणसूं पैल थे कांई हा ?

म्हारो नाम कुणाल है, म्हूँ महाराज असोक रौ मोभी हूँ। अर आ है कंचणा।

"कुणाल" नाम रौ उच्चारण सुणतापाण महाराज असोक रै हिरदै में दुखरौ दरयाव छलछलावण लाग्यो अर नैणां सूं नेंह रा टोपा बरसण लागा अर खुसी री लैंरां भी हिलोला लेवण लागी कै मुदत रै बाद आज उणरौ गमियोड़ो बेटौ अर बऊ पाछा मिलाया।

थांरी अैड़ी हालत कींकर हुई बेटा ?

पाटलिपुतर रै राज-हुकम रै कारण।

असोक रौ हुकम ? उणरौ माथौ भुईंजग्यो।

हाँ भगवन्।

वो निरभागी असोक तौ म्हूँ ईज हूं पण म्हैं तौ अैड़ौ हुकम आज दिन ताईं कदैई दियो कोनीं जठै ताईं मन्नैं याद है।

मगध देस रै राज री मोर छाप देख' र भी तक्ससिला-नरेस उणमें संसै कर्‌यो हो पण राज आग्या रै पालण रै खातर म्हैं वाँ सूं अरदास करी ही। आ बात सुणतांपांण असोक नैं याद आई कै उण राणी तक्सरक्सिता नैं एक दिन रै खातर सासन री जबाबदारी सँभलायी ही। अर हुवो चायै भली मती पण आ उवैरै ईज कुलखणां रौ परिणाम दिखै। अर महाराज असोक पछतावै रै साथ आपणें दोनां हाथाँ सूं माथै पै भचीड़ लियो।

असोक उणींज बगत राणीं तक्सरक्सिता नै तेकीकात रै बगा हेलो पाड़ियो, राणीं खुद उणीं बगत आई अर आपणों अपराध कबूल कर लियो। नटणै री तौ सवाल ई कोनीं हो।

"ईरसा रै कारण म्हैं ईज कुणाल री आंख्यां फुड़वाई ही, इणा दोनां रै दारुण दुख री कारण म्हूँ ईज हूँ, म्हैं अभागण वडो भारी अनर्थ कर्यो है।" महाराज असोक रीस रै कारण तिलमिलाइजग्या अर तक्सरक्सिता नैं घाणीं में पिलवावण री हुकम दे दियो। जलाद उवै री वधकरण नैं, उवै नैं ले'र वईर ह्विया पण कुणाल अपणीं छोटी मां नैं जीवण दान देवण री महाराज असोक सूं विणती करी। जणें असोक उणनें माफी दे दी। इण तरै वदलै री भावनां रै त्याग सूं कुणाल नैंन्हीं मां तक्सरक्सिता री जांन वचाय ली।

—

जूंनो बेली नुंवो बेली

मोहन पुरोहित 'त्यागी'

'मेवड़ले री छींट्या हमें थोड़ी मोलि पयरण ढूकी म्हूं घणी ताल सुधी इणरे थमण री वाट उडीकतो वारे श्रायो तो जोयो हवा हवले हवले ठण्डी ठण्डी चाल री है श्राभे में वादल रूई रे गोटो ज्यूं अठी उठी थपीड़ा खाय रीया हा म्हू कुदरत री इण लुका छिपी ने जोय रीयो हो के घर म.हें सूं मां रे करींगण री श्रावाज सुणीजी।'

मोय जाय जोयो तो ठा पड़ी के श्राज माँ री तबियत घणी खराब है। मोंचे हेंठ लोही री हेक उल्टी होवोड़ी ही। दो महीणा पेलां वी ऐड़ी हेक उल्टी व्ही ही। मू दौड्यो दौड्यो वैंदराज जी ने बुलाय ला.ो घणी ताल तक तपास कर वे निदोण काढ्यो के डावो फेफड़ो घावों सूं घिरीजियोड़ो है इण वास्ते एक्सरे करवाय इण रोग रे विशेपज्ञ एम सी चौपड़ा सूं इलाज करावावणो ठीक रैसी। बाकी म्हूं तो हूं जेड़ो हाजिर हीज हूं। इन डाक्टर रो पूरो नोम महेन्द्र चन्द्र चौपड़ा है। श्रा सुणर माँ री श्राख्यां में थोड़ी चमक श्रागी। वा बोली—'वैंदराज जी श्रो डाक्टर महेश वोहीज तो कोनी जीको गोरो थको है। दाहिने गाल माथे दाद रो निशोण है, कद में खटरो है। वैंदराज जी होंकरता थका बोल्या "हां माजी वोहीज है पण थे वैंने कद देख्यो ?" म्है वैंदराज जी ने वतायो के महेश चन्द्र नोम रो एक साथी म्हारो बाल गोठियो हो। सुण्यो है अवार वो डाक्टर है। मां रो विचार है, होय सके वोहिज होवे।

पूछताछ करण सूं ठा पड़गी के म्हारो महेन्द्र इज अठे टी. वी. विशेपज्ञ रे पद माथे कोंम कर रीयो है। दूजोड़े दिन वैगोड़ज तैयार होय म्यूं महेश साब ने लेवण शफाखाने हाल्यो। मने जावती टेम मां भलावण देवती थकी बोली—"वेटा

महेशी ने केजे थने शहर में आये ने इता दिन होयग्या मां ने जोवण बी नी आयो।
केजे मां ने थारी घणी घणी ओलूं आवे है।"

"हां मां म्हूँ सॅग के देस्यूं वैने थारी बिमारी री ठा कोनी ही नी तो कदै सती वो आय जांवतो। फेर बी देख लीजे वो नी आयो इणरी थैसूं माफी मोंगेला जा मां थूं सूय जा आराम कर म्हूँ वैगोहीज वावड़" सूं आ केन वयीर हुयो।

डाक्टर साब आपरेसण सांरूँ थियेटर में गियोड़ा है आप :इण वैंच माथे विराजो आ के'न एक वैंच माथे बैठण रो चपरासी मने इशारो कर्यो। घणी ताल तक म्हूँ यूं ई बैठो र्यो फेर एक पोने माथे म्हारो नोम पतो अने परिचे लिखर पर्चीयो चपरासी ने देतो थको बोल्यो—"ले भाया डाक्टर साव रे कुर्शी माथे बैठते ही ओ झिला दीजे। वो म्हारा जूना बालगोठिया है। चपरासी पानो हाथ में ले लियो।

म्हूँ पाछो उणी वैंच माथे आय बैठ ग्यो अर वाट जोवण लागो के कणे चपरासी आवे र के के डाक्टर साब आयग्या। म्हूँ अगली होवण आली घटना रे मोंह अनूंजग्यो के डाक्टर साब म्हारो पानो जावेला अर दोड़ता थका आवेला अर केला वा भाई वा चिट भेज दी। क्यूं सीधी मोंह क्यूं नी आयग्यो, फेरूं म्हारो कुशल क्षेम, पूछेला इतरा दिन घरे मिलन नी आयो उण खातर झुक झुक माफी मोंगेला अर सफाई में कई दलीलां देला। म्हूँ कूंला इण री कांई जरूत कोनी डाक्टर साब। आप मोटा मिनख होयग्या हो! जद वो मां रो पूछेला अर म्हूँ उणरी बिमारी री बात काढूंला जणे तो बापड़ो पग में पगरखी बी नी घालेला। साथे दुर वयीर होसी अर उण लेगा वगियोड़े मरीजां ने न्हायों ने काले होज बी मिलगी।

चपरासी आय म्हारे विचारां ने भंग किया अर पानो टेबल माथे राखग्यो अर डाक्टर साब रे थियेटर सूं बारे आवण री क्यो। म्हूँ हाँ भर पाछो विचारां में खोइज गो। जूनी बातां म्हारे सांमे चित्रपट ज्यूं आवण लागी।

हेक जमानो हूतो जद म्हूँ दसमी क्लास में भणीजतो। साहित्य री प्रवृत्तियां में म्हारी रुचि ही। कहाणियां अर कविताओं पत्र पत्रिकाओं में छपती रेवती। स्कूल री सांस्कृतिक समिती रो म्हूँ अध्यक्ष हो। आसपास रा कई छोरा भणीजण खातर अठे आवता क्यूं के ओइज शहर उणरे नेड़ो हो।

गिण्यां रा साल बजीयां म्हूँ जीवण जूझण सूं निरवालो होयन म्हारी अधूरी आसां ने पूरी करण खातर कल्पना रे सागर विचारां गोता खावतो। इणी टेम दरवाजे री खटखटाहट म्हारी कल्पना शक्ति ने भंग कीनी। बारे आय जोवूं तो एक

छोरो उभो है। इणने म्हूँ स्कूल में देख चुक्यो हो। म्हूँ दरवाजो सूं अलगो होय उणने मोंय आवण री इशारो करतो थको बोल्यो—"

"आव भायला बोल, म्हारे जोग सेवा कार्य।"

वो मुलकतो थको बोल्यो "आजादी रे जलसे में आपरी कविता "आजादी री डंको" सुणी मने घणी सखरी लागी। कालेज री गत साल री मेगजीण में छपियोड़ी आपरी काणी 'भील रे कड़खे' बाची, घणी चोखी लागी। म्हूँ वी इण रास्ते रो मारगू हूँ। म्हारी कीं छोटी मोटी रचनाओं है। आप इनें बाच कीं सुझाव दिराओ ला एड़ी उम्मीद कर रीयो हूँ।" म्है इण कोंम खातर म्हारी रजा दीनी। इण दिन रे बाद कई बार वो म्हारे घरे आय जावतो। वै आपरो परिचे दियो जिणसूं ठा पड़ी के वो वी पास रे गोंव खींचन में आपरी भूआ अर भूड़ साथे रेवे है। बाप अर मोंइ माँ ऊँटी में रेवे है। भूआ भूड़ रे कोई टाबर टींगर कोनी। वै इने इज आपरो बेटो करन मोंने है। अठे वो गोंव रे चार छोकरों साथे रेवे है।

परिचे दिन दिन बधतो ग्यो। उणरी मोंई माँ री उणरे प्रति बर्ताव री कथा सुणर म्हारी माँ रे ममता रो मेल बूजण लागगो। एक दिन उण सूं बोली "महेश भूआ भूड़ खींचन रे है। थूं इयां छोरा भेलो रेवे है। क्यूं न म्हारे साथे इज रे जावे। म्हारे वास्ते जेड़ो महेश वेड़ो थूं। महेश वी मां रो केणो मानगो। उणरो मोंन वी इं घर में उतोइज हो जितो म्हारे इं घर में जायें जलमियें रो हो। म्हारे भायजी जद बम्बई सूं कोट खातर कपड़ो भेजियो महेश रे वी म्हारे जेड़ो इज मेलियो। म्हारे मायतों ने यूं लागतो जांणे म्हे दोनों उणारी सरीखा संतान होवों।

पण कुदरत नो इँण घर रो भलो को सुहायो नी। कोंणी रो काजल वी उणरी आँख में खटकगो। अभागीये रा पग इण घर खानी पसरिया। भायजी री हृदय गति रुकणे सूं अकाल मौत व्हेगी। माँ रोती रोती आपरा नूर गंवावे ज्यूं कर दिया। म्हारे माथे परिवार रो बोझो आयो। भणाई छोड़ म्हूँ नौकरी करण ढूको। महेन्द्र अठारी पढाई पूरी कर ऊँटी चल्योग्यो।

कोई लाड़ा चीठी रो व्यवार चालतो रेयो पण फेरूं बन्ध व्हेगो पछे ठा पड़ी के वो डाक्टर बणगो है। आज उण बात ने चौदह वर्ष व्हेगा।

भायजी रे गुजरणे रे दस वर्ष बाद माताजी ने इण दुखदाई बिमारी आय दबोची। मां री बिमारी रो नोम सुणर नो म्हारो तो कालजे री कुली कुली कंपगी।

इणरी बिमारी रो अन्तहीज म्हारे जीवण रो अंत है । इणी खातर म्हूं म्हारे बाल गोठिये महेश-ना ना-डाक्टर महेन्द्र खनू इलाज करावण खातर आयो हूँ । अपरेसण पूरो होंवते ई अर म्हारी चिट जोंवते ई महेश हड़बड़ीज जासी अर म्हे सूं बाथे मिलर घणो दिनों सूं नी मिलण री कालजे री तपत ठण्डी करसी । चपरासी रे जोर सूं दरवाजो बन्ध करण रो खड़को सुणर म्हारे विचारां रो तार टूटगो । दरवाजा बन्द कर'र वो अचरज सूं म्हारे खानी जोंवतो थको बोल्यो—'क्यूं सा आप अजे तक अठेइज बिराजो हो ?" आ सुणर मने ऐड़ो लागो जोणे म्हारे हाथ रा तोता उड़गा हो । तो बी हिम्मत कर पूछ बैठो—"क्यूं भाया कांई हुयो ?" वो मने हालण खातर इसारो करतो थको बोल्यो— "बाबूसा सफाखानो बन्ध हुयो ने आधो घण्टो व्हेगो" "अर डाक्टर साहब ?" जद ओ म्हारो प्रश्न उवे सुण्यो तो अंगुली री सीध में देखण री कैतो थको बोल्यो— "डाक्टर महेश चन्द जी क्लब सांमी रमण री सारू जाय रिया है ।" म्हैं पूछ्यो, "थें म्हारे बेलीपे रो परिचे....." वो बात काटतो बोल्यो—"हाँ हाँ हाँ, म्हे केयो पण डाक्टर साब बोल्या यूं तो केई जूना बेली आपरो बेलीपो काढ लेसी । म्हू किण किण री निगे राखूं । आ केन वै नुवें बेलियो, वकील तहसीलदार अनें थानेदार साथे खेलण सारू क्लब खानी परा गीया ।"

चपरासी रे ए केणे सूं म्हारे विश्वास री हत्या व्हेगी । शरीर में एड़ो दर्द व्हेगो जोणे सैकड़ो विच्छुओं हेक समचे हीज डंक मार दिया होवे अर इण जैर रे फैलणे सूं जोणे आंख्यो रे आडा दिन दियाली रा तारा टिमटिमाय गीया हो अर जोणे म्हने वो केणी चावे—ओ डाक्टर रा धर्म भाई, उठ घरे हाल। डाक्टर साब ने थने बेलियों री नही, नुवें बेलियों री जरूत है । थारी बिमार माँ ने देखण री उण ने फुरसत कोनी । थोड़ो घास सूं बेलीपो निभासी तो कांई खासी । माँ म्हारी वाट जोवती होगी । घणी ताल व्हेगी है । म्हूं मण मण रे भारी पगों सूं घर खानी वयीर हुयो । माथे रे हाथ लगायो तो हाथ पसीने सूं भरीजगो । डील सारो छायपोणी व्हेगो हो ।

आकाश में बादल छायोड़ा हा । उमस गैगी ही । थोड़ी ताल पछे झीणी झीणी बून्दों पड़गा लागी जिको धीरे धीरे मोटी मोटी बून्दों में बदलगी । वर्षा जोर पकड़गी ही । घरे पूगाँ जगां तक डील माथे पाणी रा अर पसीने रा परनाला वेवण लागगा हा । मेह रो पाणी पसीने रो पाणी अर आंख्यो सूं निकलण वालो पाणी हेकल मेकल होय परनालो हो ज्यूं चोटी सूं एडी तानी वयण ढूको । भुंवाली आवते आवते घर मे वेगो वड़ियो । मांह सूं मां कणीगनी आवाज में पूछियो—

"कुण सुरेश है रे ?"

म्हे आंसुओं रा घूंट पीवतां बोल्यो, "हाँ माँ ।" माँ फेरू पूछियो— "महेश बठे हो ?"

म्हे कयो—"हाँ माँ ।"

माँ रे भले आ पूछणे पर कि महेश साथे आयो है, म्हे भुंवाली खाय माँ री खाट रे खने हड़न्द देणों जाय पड़ियो ।

——

एक दन परवाते परवाते माड्साव के घरे एक टाबर आयो ! कजाणा कुण भेज्यो ! मीठो बोलतो टाबर आपणो परिचय दियो के पास का गाँव को रेवा वालो है, माँ बाप गरीब होवा सूँ पढ़वा लिखवा में घणीज मुश्किल पड़े ।

भणवा में चोखो होवा सूं सरकार पीस्या देती ही । जी सूं हायर सेकन्डरी तक तो भणग्यो, पण अबे आगे कई करे ? नम्बर अच्छा मल्या, कॉलिज में भर्ती होवा ने पीस्या को रोड़ो अड़ग्यो, थोड़ा होता तो दे भी देता, पण चार पांच सो रुप्या एक साथे कठूँ आवे ! विद्यार्थी होच्यो के की सूं कर्जो ले ले और फेर छोरा छोरयां ने भणार ट्यूशन करने चुका द्यांगां !

विद्यार्थी टाबर री बात सुणी तो माड्साव घणा राजी होया । पीस्या म ड्साव कने तो नी हा, पण आपणा स्कूल का सहायता फन्ड मं पाँचसो रोकड़ा रुपया को कर्जो लेईने ऊं विद्यार्थी ने दे दिया ! और माड्साव रो कर्जो तनखा सूं कटतो रेगा ।

ऊ विद्यार्थी टाबर पेली किस्त 50 रु० तो आगला मीना में लाई ने दे दीदा । दूसरी आगला मीना में चार पाँच दन के आगे पाछे जमा कराई दीदा । पण तीजा मीना सूं देर होवा लागगी ! मीनो खतम होवण आयो पण पीस्या जमा कोनी होया । माड्साव मन में होच्यो के भणवा वाला विद्यार्थी ने पीस्या का चक्कर में नी पड़नो छावे । पण वॉ की घर वाली गीता मजबूर कर दियो के छोरा कने जायने पीस्या की बात करे ।

माडसाव वाण्या बुद्धि नी हा । गांव का मिनखां सूं वां को अलग हीज रवैयो हो । पीस्या वाला माड्साव की आँख्या में ओछा ने चाल बाज हा ! स्वार्थी हा ! क्यूं कि घणा दना पेल्या की बात है, माड्साव का रिश्ता में वां का भाई बन्द एक दण पीस्या उधार लेवा आया । जो खास पीस्या वाला हा वां के मोटो बगलो बणयों हो, भाई बन्द जाणी ने माड्साव चार पाँच हजार को कर्जो आपणा नाम पे दिरा दियो ! माड्साव पाछो दो तीन दाण पीस्या को तकाजो भी कर्यो, पण बात ये वे होती री और माड्साव के माथा का बाल साफ होता र्या । लेवणवार गांव छोड़र वारणे रेवा लागग्यो और पछे माड्साव पीस्या वासते तकाजो भी नी कर्यो !

गाँव का पीस्या वाला वाण्या, सेठ लोगां की मुनीमगिरी कर कर ने पीस्या उतार्या ! ई बात की माड्साव कीनेई खबर तक नी लागवा दीदी !

घर की गली में मुड़याईज हा के माड़साव रा पाड़ोसी वालूरामजी रा वाऊ हॉमें मली। हाड़ी रा पल्ला में कईं छुपाई राख्यो हो । वालूरामजी वणाराईज इस्कुल में चपड़ासी हो। श्रौर पाछला मीनाऊँ घणा वीमार वेईर्या हा। वालू रामजी री वाऊ माड़साव ने पेचाण्या तो पल्लो हमारती तकी उवी वेईगी !

माड़साव पूछ्यो के लाड़ी । अवे वालूराम जी रो जीव किस्तर है। श्राख्यां नीची करने वोली । के पेल्यां बचे तो अवे ठीक ठीक है। माड़साव वन्डे हाड़ी रा पल्ला में ठाम्वड़ा देखने वोल्या के ये ठाम्वड़ां केठे लेईजाईर्या हो ?

लाज्यां मरती तकी वालूरामजी री वाऊ वोली, के माड़साव ये टूटा फूटा ठाम्वड़ा है। जो मैं होच्यो के थोड़ा पीस्या श्रोर देई ने नवा लेई श्राऊँ ।

श्रचम्वा करता नका माड़साव वोल्या के देखां मने वतावतो !

वालूरामजी री वाऊ घवरावा लागगी कि कठेई पोल नी खुल जावे। पण वतावणाइज पड़्या । माड़साव देख्यो के चार पांच कटोर्या श्रन एक दो गिलास-भाटाऊँ जगदी तकी ही माड़साव मन में हर्मजिया के या जाण वूझ ने तोड़या तका ठाम्वड़ा वेचीं ने दवांयाँ रा पया लेवा जाईरी है। वीजली री नेई माड़साव रा मन में धमाको व्यो ! श्रोर भाटा री नेई उवा देखताई रेईग्या । हाली तक नी सक्या। श्रोर वांलू रामजी री वाऊ श्रागे परीगी। जदी माड़साव रो ध्यान टूट्यो तो थोड़ा दूरा-दूरा लाड़ी रे पाछे पाछे चाल्याग्या ।

जो वात माड़साव होची वाईज वेईगी ! के लाड़ी ठाम्वड़ा वाला री दुकाने जाइने, पाछी पल्ले पइस्या वांधती तक श्राई ।

माड़साव रो मन खाटो वेइग्यो। माथा में पीड़ा वेवा लागगी, के म्हांरा मोयला री लुगाई म्हांरे हॉमे घर रा ठाम्वड़ा ठीकरा वेच री है !

माड़साव पाछा गेला पे श्राइग्या। वालूराम जी री वाऊ पाचा माड़साव ने देख ने भेंपवा लालगी । पण माणसाव ठाम्वड़ा रे वासते पूछ्यो कोई नी। पण इतरी वात जरूर की के देख लाड़ो, म्हाँ थारे पाड़ोस में रेवाँ श्रोर थाणाँ पाड़ोसी हाँ। थाणे कणी चीज री जरूरत वे तो घरे श्राई जाणो चावे ।

वालूरामजी री वाऊ री श्राख्याँ में श्राँसू श्राइग्या । वणी रो मन गीलो वेइग्यो श्रोर वोली, हाँ माड़साव ।

जाती तकी ने फेर माड़साव क्यो के देख लाड़ी, टाबरिया ने दुःखी मत राखजे । ग्रौर थारे पईस्या-कोड़ी कई भी छावे तो घरे ग्राईने गीता पाऊँ लेई जाजे ।

या वात माड़साव केई तो दीदी, पण पाछो होच्यो के गीता रे पाँय पया कट्टूँ ग्राया ! ज्यूई'–त्यूँई माड़साव घरे गया, ग्रौर गीता ने क्यो के छोरा के पया घरे भेजणा पड्या, जो देय नी सक्यो । ग्रवके मईना में देवा रे वासते क्यो है ।

माड़साव खाणो खायो ग्रौर ग्राराम करवाने कमर ग्राड़ी कीदी ही के ग्रतराक में वालूरामजी री वाऊ घवरावती तकी दोड़ती दोड़ती ग्राई ग्रौर वोली, माड़साव, माड़साव, झट चालो, ग्राप एक दाण चाली ने वणा ने देखलो ! वणा के कजाण कई वेइग्यो ! उवा वेई ने दवाई पीवतां पीवतां नीचे पड़ीग्या !

माड़साव चालो, झट चालो····

माड़साव झट पट माचा पूँ उठ्या ग्रौर वोल्या के ग्रच्छा ग्रच्छा थूँ चाल ! घरे चाल ! मूँ गावा पेर ने ग्राइयो हूँ !

लाड़ी परी गी जठा केड़े माड़साव ग्रागता ग्रागता गीता कने जाई ने वोल्या माधू री वाई, ला मने वीस पच्चीस रीप्या तो ला लाइ दे ।

गीता तो वड़फी ने वोली । ग्ररे थाने कई वेइग्यो है ! वीस रीप्या पड्या, वी भी थाने खटक्यां है ! वी कीने देई दोगा तो रोंट्यां कन्डे ग्रठे जीमवाने जावांगा !

ग्रागता ग्रागता माड़साव क्यो के झट कर । काले मूँ इस्कुल री समिति मूँ ग्रगाऊ रीप्या लेई ग्राऊँगा !

गीता रे वात हमज में नी ग्राई ग्रौर वोली कि ग्रगाऊ लाग्रोगा तो वी कस्या कमाई कीदा तका है ! वी उदार का पईण्या है जो तनखा मूँ परा फटेगा !

ग्रवे तो माड़साव ने गुस्सो ग्राईग्यो ग्रौर वोल्या थूँ ग्रवार माथा फोड़ मत कर ! पेल्यां रुपया लाय ने देदे !

गीता दरपगी नी चावती तकी भी रीप्या लाई ने दीदी ग्रौर माड़साव फाटी पगरख्यां पेरी दोड़ चाल्या !

बालूरामजी रा घर में घसतांई ने देख्यो के बीमार चपड़ासी माचा पूँ नीचे आय ने वेहोश पड़्यो है ! और बन्डी बाऊ बन्डा मुन्डा पे ठण्डो पाणी रा छांटा देईरी है अन रोती जाई री !

माड़साब पां जाई ने होशियारी ऊँ बालूराम जी री नाड़ी देखी, छाती पे हाथ फेर्यो अन दोई जणा मिली ने माचा पे हुवायो और बोल्या के देख लाड़ी थू ध्यान राखजे, मूँ डाक्टर साब ने हेलो पाड़ लाऊँ ।

बालूरामजी री बाऊ री आख्याँ फाटी रेईगी और रोती तकी बोली के डागटर साब फीस रा बीस रीप्या लेगा और म्हांरे पाँ तो ५ रीप्याईज है ।

थूँ फिकर मत कर भगवान् सब हाऊँ करेगा । मूँ अबार डाक्टर ने लेई ने आऊँ और माड़साब रा पगाँ में जाणेँ फंखा लागग्या ।

एक घड़ी खाण्ड केड़े........

माड़साब डाक्टर ने लाया देखीं देखाई ने दवा दीदी और बालूरामजी रा घर बारणे आया तो टेम रात री वेईगी ही । सड़क पे बीजल्यां जुपगी ही । पान वाला की दुकानां पे रेड़्या बाजरया हा । लोग आईर्या ने जाईर्या हा ।

माड़साब मन में दरपता तका जाइर्या, के गीता कईं केगा ? लड़ेगा ? पण आखिर हैं तो लुगाई री जात । अक्कल कठु लावे । लुगायां थोड़ी लालची साभाव री वे है । जादा नाराज वेगा तो कई हँसी मजाक री बात करे ने राजी कर दूँगा ।

यूँ होचता होचता, चालता तकाँ माड़साब रा मन में एक सन्तोष री बात आईगी ।

के कुण कई साथ ले जावेगा !

क्षयग्रस्त

सांवर दइया

दिन ऊग्यों। पूरै बास माथै तावड़ो फैलण लाग्यो। बास रो अस्तित्व साफ दिखण लाग्यो। दोनूं कानी कच्चा घर। बीच रै रस्ते सूं रेलगाड़ी निकल्या करै। रेल री पटड़्यां सूं थोड़ी दूर तीन-च्यार फुट ऊंची भींत बण्योड़ी है। भीत पछै आउटर सिगल है। इन्नै सूं आवण आली गाडी अठै रुकै। बिना टिकट चालणिया अठै उतर जावै। टी० टी० भी आपरो हिसाब कर लेवै।

फत्तू भींत माथै बैठ्यो बीड़ी पीवतो हो। बींरा केस सूखी घास दांई बिखर्योड़ा हा। दाढ़ी बध्योड़ी ही। कपड़ा मैला-कुच हा। बो कैई दिनां सूं न्हायो को हो नी। बो भींत माथै बैठ्यो कच्चै घरां नै देखतो हो। घरां रै आगे माचा बिछ्योड़ा हा। माचा माथै फाट्योड़ा बिछावणा हा। बां बिछावणा माथै सून रा थब्बा हा। कैई घरां रै आगे माचा खड़ा कर्योड़ा हा। बां रै लारै लुगायां न्हावती ही—पांचू कपड़ा पैर'र ! सड़क रै किनारै लाग्योड़ै बिजली रै थम्भे माथै एक प्लेट लाग्योड़ी ही। बीं पर लिख्योड़ो हो—थोड़ा टाबर घणो सुख....... घणां टाबर घणो दुख !

फत्तू नै कोई हेलो मार्यो। बीं चमक'र देख्यो। सामने मंगतू ऊभो हो। बीं रै लारै मोडियो हो। तीनूं जणा चाय पीवण री सोची। फत्तू भींत सूं नीचे उतरग्यो।

बास में लोगां री हो-हा मच हुयगी। बात-बात मांय गाल्यां। घणीसीक लुगायां सफाई करण खातर गयी परी ही। भंगियां रो बास ठन्डोसोक दिखण लाग्यो।

तावड़ो धीरै धीरै चढण लाग्यो।

फत्तू आपरी पेटी लेर घर सूं निकल्यो। आपरी जागां पर आ'र बैठग्यो।

कोटगेट माथै भीड़ बधरण लागी। वीं आपरी पेटी खोली। पालिस री डब्यां काढ़ी। ब्रुस रै केसां माथै लाग्योड़ी धूड़ साफ करी। अेक मैलोसोक पूर काढ'र बैठण री जागा बुहारी। वो ग्राहक ने उडीकरण लाग्यो।

अेक आदमी आयो। बीं रै जूतां रै पालिस कर्‌यां पछै वो आपरी आदत रै मुजब बोल्यो–क्रीम लगाऊं, साब ?

–नहीं !

–क्रीम लगायां जूता काच दांई चमकेला ..।

–कित्ता पइसा दूं ?

–बीस ?

वो आदमी पन्दरै पइसा फैंकर चालतो वण्यो।

अेक छोरी चप्पल ठीक करावण नै आयी। बीं रै कनै सूं एक छोरो निकल्यो। आ कै'र–तूं बी चप्पल खरीद लै। तूं कैवै तो हूं दरा दूं....?

–थारी मां नै दरा दै....बापड़ी डोकरी उबराणी घूमती हुवैला। छोरी बोली।

फत्तू चप्पल ठीक करतो बोल्यो–अै छोरा बिगड्योड़ा हुवै ....अबूत कठैई रा।

छोरी मूण्डो मचकोड्यो। बोली कोनी।

बिन्नें साग-सब्जी वेचणियां रै गाडां कानी सुरसुराट होवरण लागी। अेक पुलिस आलो सेंग जणां नै धमकावंतो आरैयो हो। जिकै गाडै मांयली जिकी चीज चोखी चोखी लागती, उठा'र आपरै थैले में डाल लेंव तो। कोई चीं-चप्पड़ करतो तो वो आख्यां काढ-र कैंवतो–घणी टें–टें ना कर। स्साले रो चलाण भर दूं ला। कचैड़ी रा चक्कर लगावतै लगावतै चपल्यां रा तलिया घसीज जावैला !

पुलिस आलो फत्तू कनै आयो। वो गुर्रा'र बोल्यो–अरे फत्तिया, पालिस कर।

फत्तू बीं रै काला जूतां माथै जम्योड़ी धूड़ साफ करण लाग्यो। पालिस री डब्बी खोली। पुलिस आलै नस झुका'र नीचे देख्यो। बिल्ली मार्का पालिस देख'र वीं रो पारो गरम हुयग्यो। वीं गाल काढी—मादर... म्हारै साथै भी चार सौ बीसी करै...'चेरी' पालिस लगा ....

फत्तियो वीने गाल्यां काढी–मन ही मन मांय। विल्ली मार्का पालिस री डब्बी ढक'र 'चेरी' री डब्बी निकाली। पछे क्रीम लगा'र जूता चमकाया। पुलिस आलो रवाना हुयग्यो। फूटी कोडी भी को दीनी वापड़ै नै। फत्तू बोल्यो–हुंह! हद हुयग्यी बेइमानी री....! सगलो देस लुच्चै लोगां सूं भरीजग्यो। स्सालो पुलिसियो कुत्तो....!

अेक छोरी सैण्डल रै पालिस करवा'र गयी। मंगतू बोल्यो–फतिया, तूं कांई देख्यो....।

–कांई ?

–आ छोरी स्कर्ट रै नींचै चड्डी पैर राखी ही।

–चुप स्साला।

–सची कैवूं....मजाक को करूं नी....।

–हांऽऽ यार, बिलकुल साची है आ बात। मोडियो चासा लिया।

–धत् स्साला। झूठ बोले। खा थारी मां री सोगन्ध।

मोडियो और मंगतू खीं–खीं कर'र हंसण लाग्या।

होटल रै आगै लाग्योड़ै पोस्टर नै देख'र फत्तू री आंख्यां आगे फागली री सूरत नाचण लागी। फागली रै जोबन री याद कर'र बींनै झुरझुरी आयगी। बो सफीयै साथै फागली रै घरै गयो हो। सफीयै अर फागली रै साथै खावण पीवण री बातां सगलै बास में हुवै। सफीये फत्तु नै 'कामशास्त्र' री बातां बतायी। चौरासी आसणां रा नाम गिणाया। न्यारै न्यारै आसणां रा न्यारा-न्यारा मजा! फत्तू नै लाग्यो के बो मोट्यार हुयग्यो है!

\+ \+ \+

बै तीनूं चाय पी'र बारै निकल्या।

सिझ्या हुयां पछै अन्धारो ईंयांईज उतरै, जाणै मोमवत्ती सूं मोम पिघलै। अंधारै में डूब्योड़ै घरां आगे माचा बिछ जावै। लोक नसड्यां झुकायां बीड्यां फूंक बो करै। मांयनै लुगायां कोईनै 'सलटांवती' हुवै। पेट भरण'र रो अेक धन्धो ओ भी है—आं लोगां कनै।

पूरे बास में सन्नाटो टूट जावे। धड़धड़ांवती मालगाड़ी री कर्कश अवाज सुण'र लोग चमक जावे।

एक आदमी घर सूं निकल्यो । चार-पांच कुत्ता भों भों करण लाग्या । माचां माथे बेठ्या लोगां ने लाग्यो कै वै सेंग रेलपटड्यां माथै सूता है । धड़धड़ांवती मालगाड्यां बां नै कीचर'र निकल जावै । टींगर रोवै पण कोई कोनी सुणै ।

फत्तू फागली रै घरें जांवतो हो । रस्ते में मोडियो मिलग्यो । इत्तै में सफीयो आंवतो दीख्यो । बै दोनूं जणां बच'र निकलण री सोची । पण सफीये हैलो पाड्यो । बै ठैरग्या ।

–कठै जवां है ? सफीये पूछ्यो ।

–बस इन्नै-उन्नै घूमां हाँ....। फत्तू बोल्यो ।

–झूठ बोलै स्साला ? सची बता, कठै जावै है ?

–फागली कनै । मंगतू बोल्यो ।

तड़ाक् !

सफीयै फत्तू रै थप्पड़ मार्यो । बोल्यो–बीं राण्ड कनै गयो तो मर जावैला ! गरमी री बीमारी है बीं नै । बा रोग फैलावै । कदैई मोको मिल्यो तो स्साली रै चक्कू मार दैवूंला ।

फतिये गौर सूं देख्यो । सफिये में इत्तो परिवर्तन ? बीं नै लाग्यो के सफीयो कमजोर हुयग्यो है । सफीयो गयो परो । बो धीरै धीरै चालतो हो । फत्तू सोच्यो कै अबै ओ तो गयो काम सूं । बीं री आख्यां आगै बो सीन आयग्यो जद सफीयो फागली नै बाथां में भाल्यां बीरा बुक्का लैवतो हो ।

–हुंह बदमास सालो ! फत्तू बोल्यो–खुद तो रण्डीबाजी करतो-करतो बीमार हुयग्यो अर बेटो दूसरा नै उपदेस देवै ।

फत्तू बीड़ी रो टोटो फैंक'र नूंवीं बीड़ी सिलगायी ।

वो बोल्यो–तूं चालैला ?

–नहीं ! मंगतू बोल्यो

तो जा मर ! हुं तो जावूं लां ।

फत्तू फागली रै घर कानी जावण लाग्यो ।

हां ऽ, ओईज हो भागली रो मोहल्लो । घरां सूं निकलती नाल्यां....नाल्या रै पांणी सूं व्योड़ो कादो .. कादे में विल-विलांवता कीड़ा....घरां रै पाखाना री वास···· भीत्यां रै कनै कूड़ो-करकट···· मैले रा ढ़िगला···· कादै मूण्डो भर्‌योड़ा ··· सूग्रर ।

फत्तू जावतो हो । रस्तै में चम्पली मिलगी । चम्पली नै पूछ्‌यो—चम्पाऽऽ ... फागली घरै है कांई ?

—हां ऽऽ....।

—तूं कठै जावै है ?

—दवाई लावण नै । फागली री तवीयत खराब है । कै'र चम्पली टुरगी ।

फत्तू फागली रै घरै पूग्यो ।

—कुण है रे....? बूढे पूछ्‌यो ।

—मैं हूँ....फतियो ....।

—अरे फतीया, तू कींयां आयो ?

—सुन्यो के फागली वीमार है....वीं रो हाल पूछण ने आयो हूँ । अवै वीं री तवीयत कींयां है ?

—हाल तो वोत खराव है ।

—कांई हुयो वींरें ? फागली कानी इसारो कर'र पूछ्‌यो ।

...........। डोकरो चुप ।

फत्तू वटै वैठग्यो । थोड़ीक ताल में सगलो भेद वीं री समझ मांय आयग्यो । फागली रै तेज रक्तस्राव हुव रैयो हो । वीं रा कपड़ा खून सूं खराव हुंवता हा ।

वा बोली—बापू ऽऽ तूं मांय जा....हूं कपड़ा ठीक करसूं ।

फत्तू ऊभो हुयग्यो । वोल्यो—अच्छया, अवै हूं जावूं ?

—आंवतो-जावतो रैया कर रे फतिया ..! डोकरै कैयो ।

घर सूं वारै निकलती टैम वींनै डोकरै रै खाँसी करण री आवाज सुणीजी–खों....खों....अक्खों....!

ओफ्फो ! खांसी ! मृत्यु सूचक खांसी ! मूण्डे सूं निकलता कफ। कफ में खून ! खून में काला वव्वा।

फत्तू घर सूं वारै आयग्यो पण वींरै कानां में खांसी री आवाज हालतांई गूंजती ही—खों....खों....अक्खो....!

वीं नै लाग्यो कै ओ पूरो मोहल्लो खांसे है। ई मोहल्ले रै मूण्डे सूं कफ पड़े है। कफ में खून है। खून में काला वव्वा है।

फत्तू नै भी खांसी आंवण लागी—अक्खों अक्खों .. अक्खों....!

———

सिणगारी

नृसिंह राजपुरोहित

सिणगारी आज मूड़ में ही। सड़क रै सैं बीच ऊभी होय नैं पोतारो मंत्र जोर–जोर सूं बोलण लागी—लाकड़............थूंबड़............ तड़ाक................ तूंबड़............ताक बिना बिन............फेमिन वर्क............मस्टरूल................ हा ! हा ! हा !

मंत्र बोल्यां पछै जोर जोर सूं हंसणैरी उणरी आदत ही। वा इतरी जोर सूं हंसती के मारग वैवता मिनखां रा पग मतै ई ठम जावता। छोरा उणरै च्यारूं मेर घेरो घाल देवता। वा हंसती जावती अर छोरा तालियां बजाय बजाय नैं कैवता जावता—ए सिणगारी लाकड़ थूंबड़ ! ए सिण गारी तड़ाक तूंबड़ ! अर वा हंसती हंसती दोवड़ी वल जावती। लटिया बिखर जावता, फाटोड़ा पूर आगा पड़ जावता, आंख्यां सूं पाणीं झरण लागतो अर वा बेहाल व्हे जावती।

आज ई जसवंत सराय रै आगै ओ सागैई नाटक चालतो हो के सांम्हाली दुकान वालो सेठ डंडो लेयनैं आयो।

क्यूं बापड़ी गेली नैं तंग करो रै हराम खोरां ! छोरा एकर तो डंडो देखनैं भागग्या, पण अलगा जाय नैं फेरूं हाका करण लाग्या—ऐ सिणगारी लाकड़ थूंबड़ ! ए सिणगारी तड़ाक तूंबड़ !

डंडा रै डर सूं वा ई पोतारी घर वखरी सांवट नैं बिजली रा थांभा कनैं चुपचाप बैठगी। जीवण रा जूना चित्रांम आंख्यां आगै फिरण लाग्या—लाकड़ थूंबड़ ?............हां, हां............लाकड़ थूंबड़ तो एक गांम रो नाम है............ जठै उणरो घर है, खेत है, गाडरां बकरियां री लांठी एवड़ है................ईणरी

डोकरी बाप केवै—सिणगारी म्हारीं एकाएक भागवंती बेटी, बेटा पांतई वत्ती। इणरी मा वैठी व्हैती तो इणनैं देखनैं कितरी राजी व्हैती। जीवतां थकां इणरा हाथ पीला कराय दूं तो मरयां ई मुकोतर जाऊं।

... .देखजे बेटा एकली एवड़ लेय नैं कांकड़ में जावै तो है, पण ध्यान राखजै जीव जिनावर री, ग्याभणी बकरियां री!

दुकान वालौ सेठ पाछौ धंधा में लागग्यो तौ छोरा फेरूं भेला होवण लाग्या। एक जणै जलेबी रौ टुकड़ौ उणरै कटोरा में नाखनैं कहयौ—ए सिणगारी वो हाजरी वाली गीत तो सुणा! वे सगला एक साथै इज बोलण लागग्या।

कटोरा में जलेबी री टुकड़ौ उठाय नैं उणै मूंडा में घाल लियौ।

सिणगारी आज भूखी है। ए गुलवा! दौड़ नैं थारी दुकान सूं खावण नै तो कीं लावै नीं डोफा!

अर भूरा कंदोई रौ छोरो गुलाबो दौड़नै बापरै छांनैं खासी भली बासी पुड़ियां अर कीं मिठाई उठाय लायौ। वा नीची धूंण घाल्या डूजा-डूज खावण लागी। छोरा ऊभा ऊभा देखता रहया। खायां पछै वा किसना बा रै ढाबा माथै पाणी पीवण नैं गई। किसना बा रौ ढाबौ सिणगारी रौ कायम रौ डेरौ हो। उणरा गूदड़ अर कटोरौ ढाबै रै लारै पड्या रैवै। दिन री बगत वा लटिया बिखेरियां अर पूर ऊंचायां अठी-उठी फिरती रैवै। ओ कई बरसां रौ नेम हो। ढाबा सूं उणनै रोटी मिल जावती अर इण रै एवज में वा ढावै रा एंठवाड़ा ठीकर मांज देवती। जसवंत सराय रै आगला दूजा ढावां वाला ई मौको पड्या उण सूं एंठवाड़ो मंजाय देवता। वा ई मूड में व्हैती तो मांज देवती नीं तो तड़ाक तूंवड़ करनै अंगूठौ बताय देवती।

किसनै वा उणनैं पाणी पावतां कहयौ—दिनूंगै ई कठै रोवती फिरै है रांड? रोटी गिटणी व्है तो ठीकर लेयनैं मरै क्यूं नीं? पछै वासण मांजणा है। वा पाणी उछालती बोली—लाकड़ तूंवड........ तड़ाक तूवड़ ....लै लै लै लै।

किसनौ वा गरज्या—नकटी रांड लिपलिया करै। एंठवाड़ौ पाणी उछालै। क्यूं मौत आई है?

छोरा नै मजौ आयग्यो। वे हाल मजमो जमायां ऊभा हा। वा आय नैं बैठी

तो व ई घेरो बणाय नैं बैठग्या । कैवण लाग्या—ले सिणगारी, अबै तो सुणाय दे वो हाजरी वाली गीत ।

वा हिचकी रै नीचै हथाली राखनैं गावण लागी—

बाबूजी म्हारी हाजरी मंडाय दो कागद में

टीपूड़ी मंडगी नैं बापूड़ी ई मंडगी

सिणगारी गवोला में रैयगी ओ बाबूजी

म्हारी हाजगी मंडाय दो कागज में.....................

हाजरी वालो गीत उणैं फेमिन कैंप में सीख्यो हो । उणनैं याद आवण लाग्यो........ ...एक........दो.... ....तीन.... ....लगता तीन दुकाल! मेह री छांट ई नीं । बकरियां–लरड़ियां सगली मरगी । एवड सफा व्हैग्यो............घर में खावण नैं दांणो ई नीं........मरतां वगत डोकरा बाप री आंख्यां डब डब ही । .... वा गांम वाला सागै फेमिन कैंप में पूगी.................सुपरवाइजर बाघसिंह री गेंग नंबर पैंतीस........... नामो मंड्यो....... सिणगारी बेटा मूलारी....... साकिन लाकड़ धूंवड़ .... परणी के क्वांरी ? उमर याद क्वांरी रे क्वांरी........अकन क्वांरी उमर ? कोनीं । सुपरवाईजर हंस्यो........... वीस बरस लिख दूं ?....... फाटोड़ा गाभां में वा सरम सूं दोवड़ी व्हैगी । सरीखी सांइणी

लारै लागगी—

....ठाली भूली री सरीर तो देखो जाणै सांचै ढलयो !

..................रूप जाणै आभै री अप्सरा !

..................चालै तो जाणै जमीं धरकै !

.. ..धीमे ए सिणगारी धीमे ! कठै ई बाघसिंह री निजर नीं लाग जाए ।

पां....... पां करती एक मोटर उणरै आगै होय नैं निकलगी । बाई पूर खांवे नांखनैं रवानैं व्हैगी । ढावा वालै किसनै वा लारा सूं हाको कियो—

कठीनै मरै है ए नकटी रांड ? आय नैं झट बासण मांजले, नीं तो आज टुकड़ा नीं मिलैला ।

उणँ कीं गिनरत नीं करी अर नीची घूण घाल्यां सरदारपुरा कांनी रवानै व्हैगी । सांम्ही बैठयौ किताबां री दुकान वालौ मड़कल पंडत हँसण लाग्यौ ।

एक दिन फेमिन कैंप में वाघसिंह उणनैं इणीज भांत धमकी देवतां कह्यौ हो—देख सिणगारी मान जा, पछै पछतावैला ! याद राखजै मस्टरोल में सूं नाम कटग्यौ तो भूखां मरती मर जावैली ।

वा पग रा अंगूठा सूं जमीं कुचरण लागी ही ।

—थारी सगली साथणियां टीपूड़ी, धापूड़ी अर चौथकी वारी वारी सूं म्हारौ कैवणौ मानगी है तो थूं इसी कांई आभैरी अप्सरा है, जो इतरी करडांण राखै ।

वाघसिंह उणरी पुणचौ पकड़ लियौ अर उणँ खांचनैं कनपड़ा में जरकाई ही एक थाप………झप्पीड़…………करतौड़ी । छैल भंवर रै आंख्यां आड़ी अंधारी आयगी व्हैला ।

दूजोड़ै दिन इज मस्टरोल में सूं उणरो नाम कटग्यौ हो । उण दिन वा एक खेजडी रैं बाथ घालनैं धाप नैं रोई ही……………वापू ! वापू ! म्हानैं एकली छोड़नै कठी गया रे वापू ! ………… ….थांरी लडकी धीवड़ रनां वनां में एकली कलपै रे वापू ! ………………………….

चालतां चालतां उणरी आंख्यां में पाणी आयग्यौ । महात्मा गांधी अस्पताल रै आगै एक डोकरी नीची धूण घाल्यां बैठी हो । वा उणरै नेड़ी जायनैं बोली वापू-वापू ! डोकरै चूंधी आंख्यां मिचमिचाय नैं माथौ ऊंचौ कियौ । वा दो पाँवड़ा लारै सिरकगी । वापू रै तो मोटी मोटी आंख्यां ही प्याला जिसी । ओ तो कोई दूजौ इज है……………वापू तो कदेई मरग्या !

वा जालौरी गेट आलै पेट्रोल पंप रै आगै ऊभी व्हैगी । अठा तांई उणरी रमणी ही । इण सूं आगै वा पांवडो ई नीं धरती । नित रोज अठै आयनैं ऊभी व्है जाती अर पेट्रोल पंप वालो उणनैं धुरकार नै काढ देवतो । आज वो कीं काम में लाग्योड़ो हो सो वा घणीताल उठै ऊभी रही । उणरी निजरां आगैं सूं मोटरां, तांगा, स्कूटर साईकिलां अर पैदल मिनख आवता जावता रह्या अर वा आख्यां फाड्यां देखतीं रही ।

उणनैं चोपासणी रोड कांनी सूं एक लुगाई आवती निगै आई। ऊजला गाभां में फूटरी फररी अर गोरी निछोर। छाती सूं चेप नैं एक नैंनौ टाबर तेड्यां। टाबर कबलौ कवलौ गोल मटोल रबड़ रा बबला व्है जिसौ फूटरौ। वा लुगाई ज्यूं'र नैड़ी आवण लागी वा इण नैं खरी मीट सूं देखण लागी। लुगाई स्यात डरण लागगी ही। वा माथौ नीचौ कियां उण रै आगै कर फुरती सूं निकल जावणौ चावती। पण वा ठीक उण रै सांम्हां पूगी के सिणगारी एकदम झड़पनैं टाबर उणरै हाथ सूं खोस लियौ। लुगाई जोर जोर सूं कूकण लागी अर उणैं तो उठा सूं तेतीसा मनाया। लोग-बाग भेला व्हिया अर बात समझ में आई जितरै जितरै तो वा ठेट अस्पताल सांम्ही पूगगी। दो एक मोट्यार उणरै लारै दौड़्या। आगै सिणगारी अर लारै मोटयार। छेवट आ रेस जसवंत सराय रै सांम्ही जाय नैं पूरी व्ही। टाबर री मा रोवती कलपती सांग फांण व्हियोड़ी उठा तांई पूगी जितरै नीठ लोगड़ां सिणगारी रै पंजां सूं टाबर नैं छुड़ायौ। उणै उण नैं काठौ छाती रे चेप राख्यौ हो अर घणौ दोरौ छोड्यौ।

....मारौ स्साली नैं ....रा हाका सागै च्यारूं मेर सूं भीड़ उणरै माथै पड़ण लागी। डोकरा किसना वा नैं दया आयगी। उणा बीच में पड़नैं नीठ उणनैं छुड़ाई। भीड़ नैं हाथ जोड़तां कह्यौ—छोड़ दो रे बापड़ी नैं गैली है! अभ्यागत है। आ कदेई कदेई बातां करै जिण सूं जाण पड़े के आ कोई इज्जतदार भला घर री बेटी ही पण पच्चीसा दुकाल में भूखां मरती गेली व्हैगी।



नुवीं राह

मीठालाल खत्री

"बहू, पांणी ....", मांचा माथै सुतोड़ी सास पूरो कैव ई नीं सकी कै खांसी सरू वुई। चूल्हा में बैठी केसी झट उठी अर सास रै कमजोर मौरां माथै हाथ फेरवा लागी। केसी रीढ़ री हाड़कियां सांव गिण सकै। सास दौड़ दौड़ थाकै रिह है। पण वा बी कांई कर सकै? सास सफाखाना री दवा लेवा सूं सांव मना कर दियो है। अर फेर सास नै पांणी री लोटो दी।

"घणी गरम है!" पांणी पियो बाद कह्यो।

"पंखी सूं हवा करूं?" अर केसी भींत माथै टांगयोड़ी पंखी ले नै हवा करवा लागी।

सास बहू रै लांबा अर उजला चेहरा री तरफ देख्यो, उण री खूबसूरती माथै उदासीनता तैर री ही। केसी रा सूखा काला बाल बेतरतीबी सूं कानां माथै बिखरियोड़ा हा। पण उणी कांई मालूम हो कै बिधाता उण रै धणी री उमर कम राखी ही। अगर उणे ठा वैतो तो वा बी सावित्री री तरह यमराज रो पीछो करती अर वर मांगती। सास री आंखां अेक घड़ी डबडबा आई। केसी पोता री ओढ़नी सूं सास रा मोती सरीखा आंसू पोंछती थको कह्यो—"सासूजी, थैं अतीत नैं भूल क्यूं नीं जावता?"

"कीकर भूलूं, बहू?" सास री धीमी आवाज।

"तो फेर रै-रै नै मंन नै दुखावा सूं फायदो कांई? इणसूं अच्छो तो ओ है कै आपां बितोड़ा वगत नै यूं मिटा दो कै आपां रो उण बितोड़ी यादां सूं कोई बी रिस्तो ई नीं हो।" केसी उणींणी बैठ गी।

थोड़ी देर पछै आभा में बादल गरजवा लागा। आज सुबह सूं आभो बादला सूं सरीज ग्यो हो। यूं लागै रिह्यो है कै सूरज दिखायी बी नीं देवेला।

"छाटां आवै री है कांई ?" अेकाअेक सास पूछ्यो।

"ऊं हूं····"। आगे फेर कैंवती, पण सास री जीव घबराती देख उण रै मीरां माथै हाथ फेरवा लागी। उलटी वेई, पण वुई नीं। अर फेर बोलीं—

"अेकाध रोटी लावूं ?"

"मत लाव, भावै नीं।"

"आधी तो लावूं ईज परी ······" वा उठवा लागी।

"ना····· टकडो ई नीं भावै।"

अर फेर दोय जणां चुप रिहा। दोयां री नजरां अेक–बीजा माथै टिकीयोडी ही। पण होंठ खुलै नीं रिहा हा, सिरफ हिलता रिहा, शायद बोलवा सारू सब्दां री कमी मैंसूस वै री ही।

अेकाअेक आभा में बिजली खमी। केसी बारै री छत रा रोसनदान ढाकिया। ठा नीं बरसाद करी वै जावै। आज सुबह सूं जल भरियोडा काला बादल गरजै रिहा है। खांणो बनावियो रै पछै केसी सास नैं गुड अर काली मिरचां री चाय बना वै नै दी। वै अैडा इ चाय पिवै।

अर फेर वा अकेली कमरा रै अेक खूणा में आवै नै बैठ ग्यी। वा अठै हैठी बैठ न पीता रै भाग्य माथै आंसू बहावै। अर फेर उणी ध्यान आयो कै अेक दिन अणईज कमरा में वा पीता रै धणी रै आवा री बाट जोवै री ही। पण आज वा किणारी बाट जोवै ? धणी रो सुख उणी थोड़ो ई मिल्यो। विवाह रै वै बरस तक ई। फेर टाईफाईड नैं उणी घेर लियो हो। वै उण नैं खूब पियार करता हा। बीमारी रै पैला जद वै अच्छा हा, कह्यो हो—

"थूं खूब अच्छी लागै।"

"सच ······"

"म्हैं चावूं कै थूं म्हारै साथ ई रैवै।"

"म्हैं बी आईज प्रार्थना करूं कै आपां री ओ बंधण नीं टूटै।"

"भगवांन आपां दोयां री उमर घणी करै।"

अर उगा रा दोय हाथ केसी रै खवां माथै हा। उगा री आंखां केसी री आंखां में झांकै री ही; उग री आंखां में पियार उफंगो रियो हौ। अेकाअेक केसी उग रै मजबूत कसाव में जकडीज ग्यो ही।

जद वै मांदा हा तो कैवता—"म्हैं जल्दी ठीक वे जावूंला।"

केसी री गलो भरी जावती। वा कुछ बी कै नीं पाती। बस जो कुछ वै कैवता, वा लकड़ी री तरह चुपचाप सुंगती रैवती अर मंन-ई-मंन भगवांन सूं बिनती करती कै पोता रै धगी नै जल्दी सूं ठीक करै।

"केसी!"

"क्यूं, कांई है?"

"म्है ठीक वै जावूंला?"

"हां...... थैं जल्दी ठीक वै जावोला।"

पगा अेक रात वा धगी नै पांगी देवा सारू उठी। उगा री आंखा धगी माथै अटकीं अर वा थर्-थर् कांपवा लागी। वै स्वास लेवा में दिक्कत मैंसूस करै रिहा हा। आंखां री पुतलियां स्थिर ही। गास श्री जागी। सास-बहू रै देखता देखता अेक आत्मा नारवांन देह सूं निकल ग्यी। दोयां री आंखां सूं आसूं गंगा रै नीर ज्यूं बैहवा लागा।

समाज रै उसूलां मुताबिक केसी घर में कैद री जिन्दगी गुजारवा लागी। हाथां में पैरियोड़ी कांच री राती चुडियां फोडी। बालां में सिन्दूर भर नीं सकती। अर नातरी करगो कोसां दूर ही। उणी लागो, अेकाअेक तूफांन उगारी जिन्दगी में आयो, अेक वार में ई सारी ई तबाह कर दियी।

बेटा री मौत सूं सास रै दिल माथै गेहरी ठेस लागी। रो-रो नै आसुआं री झडी लगावती। अर वै मींना पछै सास श्री मांची पकडियो, जो आज तक चालै रियो है।

...... अर सास पांगी मांगियो। सास नै पांगी री लोटो दियो अर फेर मांचा रै पागनै ई हेठी बैठ ग्यी। अजै छांटा आवै री ही। रोज अणुईज ठैम छांटा आवै।

"बहू, चादर ओढ़ावै……"

अर केसी सास नैं चादर ओढ़ावी। पछै वा चाय बनावा सारू रसोवी में आगी। गुड़ री चाय बनावै नैं सास नैं दी।

थारै छांटा री हद घणीज बढ़गी ही। केसी नैं लागै रैही ही, अे हदां खतम क्यों नीं वै जावती, अेक ई वार में, अेक ई बिस्फोट में। अे नीर भरियौड़ा काला बादल अेक ई बार में क्यूं नीं बरस जावता ? उणै सोच्यो, अेक दाण अे सारी हदां खतम वै जावैला, इणां रो अस्तित्व ई नीं रैवैला। पण हदां खतम वैवा री बजाय बढ़ती ई जावै री ही। अर केसी मन–ई–मन घुटती रैवती, सिसकती रैवती, क्यूं कै वा जाणती कै इण हदां अर पुरांनी यादां में घुटन, खामोशी अर भटकाव रै सिवा राख्यो ई कांई ? समझ में नीं आवती कै आखिर अे सारी यादां मिनख सूं इतरो अटूट सम्बन्ध क्यूं राखै। अगर राखै वो तो रै–रै नैं मन दुखांणो कठा तक ठीक है ? सब अेक ई बार सतावै नैं सान्त क्यूं नीं वै जावती अे यादां ?

"कितरा बजिईया वेई ?" अेकाअेक सास पूछ्यो।

"क्यूं, कोई कांम है ?"

"हां ……"

"कांई ?"

"रसोई नीं बनावणी कांई ?"

"वैपार री रोटियां वी पड़ी हैं, म्हारे सारू घणी हैं। अर फेर थें तो खावोला नीं……"

"तो कांई वुयो ? थारै सारू तो बनाव।"

"ऊँ हूँ……"

"थनैं कांई वै गयो है ? ……इतरी गुमसुम क्यूं रैवै ?

"कठै रैवूं इतरी गुमसुम।" आवाज रूआंसी ही।

"कांई करां, बहू ?" अेक लम्बी उसांस।

सास री अैड़ी वातां सूं उणरी आंखां आर्द्र वै जावती। वा नीं चावती कै कांई बितौड़ी यादां नैं कुरेदै। वा सब कुछ भूल जाणो चावती। उणैं अतीत सूं अेकदम पिंड छुड़ाणा चै यो ही। पण अतीत उण रै वरतमान जीवण मायै हावी वेगो

चावैं। वणी री यादां में उणी डुवियौड़ी देखणी चावैं। आखिर ओ सब कठा तक चाली?—जद तक जीवण है।

"कांई सोचै री है?" सास री सवाल हो।

"कोई नीं……" अर वा उदास मुंडौ लटकावै नै बीजा कमरा में आगयी।

बीजै दाड़ै तड़कै ई सास री तबियत पैला सूं ज्यादा नरम ही। अेक घड़ी केसी सास नै देखती री अर फेर तेज कदमाँ सूं डाक्टर नै बुलावा ग्यी।

राजा करण री वेला दरवाजो खटखटावा री आवाज सुणता ई डाक्टर दरवाजो खोल्यौ अर पूछ्यौ—"कीकर आइ?"

"सीरिअस केस है, डाक्टर सा'व! टैम मत करजो।" केसी री आवाज में घबराहट रै साथै-साथै अजनबीपंन वी हो।

डाक्टर जल्दी सूं हाथ-मुंडौ धोवै नै केसी रै साथै घरै आयौ। देख्यौ कै सास री छाती जल्दी-जल्दी सिकुड़ै अर फुलै री है। डाक्टर केसी नै धीरज दियौ अर कह्यौ—"फिकर री बात नीं है। जल्दी ई ठीक वै जावेला।"

अर डाक्टर नै केसी रै हाथाँ में गोलियां दी तौ वौ केसी रै किताबी उजला चेहरा नै देख मुग्ध वै ग्यौ। वौ उण विधवा रौ हाथ पकड़ेला, आ बात डाक्टर पौता रै मंन में सोच ली ही।

"अबै जाऊं……आज इतवार है, कोई खास बात वै तौ खबर दीजो।"

"आप री फीस?"

"दे देणा बाद में।" फेर कुछ ठहर कर कह्यौ—"अर फुरसत मिलै तो म्हारै घरै आवै नै दवा ले जाजो।"

अर डाक्टर देहरी सूं नीचै उतरियौ, केसी उणै ताकती री। धीमै-धीमै डाक्टर री आकरति उणरी आंख्यां सूं ओझल वैती ग्यी।

दैपार बाद वा डाक्टर रै घरै आई। सास नै कैय नै कै वा डाक्टर रै घरै दवा लेवा जावै री है। देहरी माथै पग धरता ई कुरसी माथै बैठोड़ा डाक्टर सा'ब पुठै देख्यौ—"आ ग्यी……"

"म्हूं दवा लेवा आई हूं।"

"बैठो तो सही……"पाखती पडियोड़ी कुरसी री ओर इसारौ करता थका डाक्टर कह्यौ ।

वा धीमैं सूं कुरसी माथै जम ग्यी ।

"अेक बात पूछूं ?"

"पूछो……"

"मैरिड ही ?"

"थानै इणसी कांई मतलब ?" उणै डाक्टर सूं अैड़ा सवाल री आसा नीं ही । वा नीं चावती कै उण रै अतीत नै कोई वार-वार कुरेदै । उण री आंखां में आंसू आ ग्या ।

"ओह ! थांनै ठेस लगी !" ओ सवाल उणसी क्यूं पूछ्यो ? कांई डाक्टर नींजांणती ही कै वा विधवा है ? अर फेर सोच नै बोल्यौ,—"इण उमर में भगवान् नै थांरै साथै अच्छौ नीं कियौ……"

"भगवान् नै ओइज मंजूर ही, डाक्टर साव ।" वा भीनोड़ी आंखां नै काली ओढ़नी सूं पोंछवा लागी ।

"नातरौ क्यूं नीं कर लेवती ?" डाक्टर केसी री आर्द्र आंखां में देख्यौ, उण री आंखां में जीवन तैर रिही ही ।

"डाक्टर सा' ब, म्हैं अेडो नीं कर सकती ।"

"क्यूं ?"

"समाज रै बंधण री वजह सूं……"

"अेक बात कैवूं ?"

"हां……"

"किणी पुरुष री औरत मर जावै तो कांई वो पुरुष बीजो विवाह नीं करतौ ?"

"करै……"

"फेर औरत क्यूं नीं करै सकती ? पुरुष रै खातर तौ ओ समाज अेडौ कर गयौ अर औरत नै नवौ जीवण देवारौ नियम नीं बना सकतौ……आज री जवांन पीढी इण रिवाज नै तोडै नीं सकै ?" उणै लागै रिही ही कै आज सारी

दुनिया वदल ग्यी है, पण समाज रा रिवाज नीं वदलिया। अर विधवा विवाह री रांगां तौ खूब ई कमजोर हैं।

"म्हारै तोडवा अर नीं तोडवा सूं कांई फरक पडेला ?"

"करै नै देखौ तौ सही। म्हैं कैवे रिह्यो हूँ कै ओ समाज कोई वी नीं विगाड़ सकतौ।"

"पण ... ."

"पण कांई ?"

"सासू जी इणै मांनी ?" पीता री तरफ सूं केसी डीली वै ग्यी।

डाक्टर नै उण री आंख्यां में भांकियौ, उण री आंखां में दवी वासना री झलक ही। उणरा दोय हाथ केसी रै खवां माथै हा। अेक घड़ी रै वास्तै केसी रो सिर डाक्टर रै वायां खवां माथै आ ग्यौ। अर धीमै-धीमै दोय जणां अेक-वीजा री मजबूत वाहां रै कसाव में आवता ग्या।

अर फेर वा दवा लै नै घरै आई। सास ऊंघै री ही।

सास रै उठवा पछै केसी उणै दवा दी। अर फेर वा वीजा कमरा में आय नै वैठ ग्यी। वैठा-वैठा उण रै अंतस में डाक्टर री आकृति उभरी। पण मंन-ई मंन डर वी पैदा वै रिह्यौ हौ कै सास कांई कैवेला। सास वात मांनी कै नीं मांनी ?

वीजै दाड़ै सांझ रा डाक्टर आयौ। सास री हालत में सुधार हौ। अर फेर डाक्टर नै केसी री वात की तौ अेक घड़ी सास री जबांन माथै तालौ लाग ग्यौ। अर फेर थोड़ी टैम वाद मना कर दियो।

"जाणती हौ, औरत विवांह क्यूं करै ?.........मां वनवा सारू अर पुरुष रै प्रेम सारू......" डाक्टर धीमै सूं कह्यौ।

"म्हैं सव जाणूं, समझूं पण समाज रै दस्तूरां नै ठुकरा वी नीं सकती ....
......"

"क्यूं ?"

"क्यूं कै म्हैं नीं चावती कै समाज म्हनं कसूरवार ठहरावै।"

"वात समझौ। अगर पुरुष री वजाय औरत पैला चल वसै तौ पुरुष कांई

करै ?………अजै बापड़ी री राख ठाड़ी वी नीं वुई कै पुरुष बीजो विवाह रचावै। म्हैं पूछूं कै समाज नै इण क्यूं नीं रोक्यो ?" डाक्टर स्पष्ट कह्यो।

"पण कांई कियो जावै ?"

"केसीं री नातरो करै नै समाज रै गलत उसूलां री रांगां हिलाव दो।"

सास चुप ही। शायई वा सब्दां री कमी मैं' सूस करै रिहा हा या फेर पोता री स्वीकृति देवा रै पैला सोचै रिहा हा।

अेक घड़ी सान्ति छायै री। तीनां जीव अेक-बीजा री तरफ बारी-बारी सूं देखै रिहा हा। पण बोलै नीं रिहा हा।

फेर अेकाअेक सास नै सूखा-पपड़ायोड़ा होंठां माथै जीभ फेरी; होंठां माथै चिपचिपाहट पैदा वै मिट ग्यो। अर फेर सास नैं स्वीकृति दी।

केसी नैं डाक्टर री आंखां में झांकियो, उण री आंखां में नवी राह नजर आवै री ही। वा नवी राह, जिण माथै वा डाक्टर रै साथै नवो जीवण बनावेला।

——

मोसर बंद

देवकिसन राजपुरोहित

ठाकर हरिसिंघजी पूरी उमर पाय, बेटा-बेट्यां नैं परणाय पताय'र आपरै लारै च्यार कंवरड़ा हां जिणांरा बंटवाड़ा कराय'र राठौड़ी बजांता बजांता देव लोक सिधारगा। ठाकर री जोड़ रो आंण-बांण आलो मिनख चोखला में हेर्योड़ोई कोनी मिलतो। ठाकर पूरो न्याव करता। ठाकर रो नांख्योड़ो ईज लूंण नंखतो। ठाकरां रो कह्योड़ो टालण री हिमत करणी हंसी तमासो नीं हो। ठाकरां रै हाथां सूं बडेरा रै लारै मगला लेण देण कर्योड़ा हा। मीरा चरी री न्याव तो ठाकर पीरईज माजीसा लारै करी ही।

ठाकरां रे देवलोक ह्वै तांई बीजोड़ा रो बख लागो! कंवरड़ा छोटा हा। मोटोड़ा कंवर भीमजी'र हेमजी समभणा हा। छोटकिया कंवर नीयेजी'र भींवजी स्कूलड़ी लारलै सालईज छोडी ही। ठाकर लारलै साल केंवता हा-कंवरड़ा नै म्हारा हाथां सूं परणायल्यूं तो पछै कीं मनमें कोनी रैवे। आद भवानी ठाकरांरी मन्छ्या आखातीजां नें पूरी करदी। दोन्यूं कंवरड़ा बींद बिण्या। ढोल रै ढमाके जानां चढ़ी। गाजाबाजा रे समचै फेरा ह्वै गया। ठाकरां नै नैहचो ह्वियो। छोगला नें ठाकर कह्यो छोगला! अबे भलाई सांवरियो आजइज बुलायले तो राजी खुसी बेटां रे खांदै जावां परा। छेवट रामजी ठाकरां नें बुलाय लिया।

च्यारूं कंवरड़ा पोल में बैठ्या'र विचार्यो'क आपजी रे लारै कर्यै करणो। छोटकिया कंवरड़ा रै नूंवां जमाना रो वायरो लागोड़ो हो। हेमजी बोल्या-भाई। जमानो चोखो कोनी। मोसर तो नीं करणो जोईजे। लारला दिनां रामपुरा में सांवलजी मोसर मांड्यो हो, पिण राजआला उणनें रोकाय नांख्यो। खासी गुनैगारी करी। मोसर राजआंनी सूं बंद कर्योड़ा है। भींवजी बोल्या—'पिण आपजी लारै धरमादो काढणो जोइजे, ईंण खातर गांवरी स्कूलड़ी चोखी बिणाय'र आपजी रा

नांव री भाटो लगा देस्यां तो चोखो रहसी । धरमादा रो काम है । मोटोड़ा भोमजी बोल्या—थैं दोन्यूं हालतांई टाबर हो, थांनैं कांई ठा । न्यातड़ी तो करनीइज पड़सी । न्यात गंगा सूं उंचो कुंण ? न्यात भैला तो भागियां रै थरपीजै । कागद-कलम-दुवातियो ल्यावो पंचां नें हेलो पाड़ो'र चिठयां फाड़ो । हुकम देवतां पांण भींवजी उठ्या'र भोमजी रा हुकमरी तामील करी । चिठ्यां फाटी । पांच्यो भांभी गांवां में ठाकरां री न्यातरी चिठयां पुगावा निसरयो । तरै तरै री चीजां वसतां मोलीजण लागगी । विसनजी रिप्या ले'र निकलया हा घी ल्यावण नैं । ठाकरां नैं ठाडे पांणीं गंगाजी घालण नें गिया हा माराज तिलोकदासजी'र मलूकदासजी । ठौड़-ठौड़ ठाकरां री न्यातरी वातां चालती ही । "ठाकरड़ो ठीक आदमीड़ो हो । कंवरड़ा लारै चोखा निड़वया जिको मौसरड़ो ह्वे ज्यासी, नींतर आजकाल रा थोड़ाइज छोरा सपूत ह्वे है। घणांरा तो माथा भूंण ह्वे ज्यूं रवै है।" पेमजी-भेमजी नें कह्यो'र अमलड़ा रो हंडियो सांमो कर'र अमल रीमनवारड़ी करी । नेमजी चिणा जितरी-जितरी अमलड़ा री दोय किरच्यां उठाई'र दे रंग गले उतारी, पछै करयो खैंखारो अर बोल्या-किसोक राज आयो है ? अमल वंद कर दियौ, मौसर वंद कर दिया । ईं राज रो आं में क्यं लागतो हो (पेमजी होको गुड़गुड़ावता बोल्या—अरे थें तो अमल'र ओसर-मोसर वंद करणरी वात कैवो हो, ओ राज तो कैवे है क टावर ई बंद कर दैला । दोन्यू डोकरा हंस्या । नेमजी नें तमाखू रो खारो गुटको आयो'र खलु खलु धांसण लागगा । पेमजी आजकाल रा पलट्योड़ा जमाना रो अचूंबो करैहा ।

नेमजी बूझ्यो-न्यात कद है ? चिठी पढ़णियो टावर बोल्यो-वावोसा । चिठी में लिख्यो है, न्यातरो कीरतन इग्यारस सोमारो, न्यात'र गंगाजली वारस मंगलवारी अर विखेर तेरस वुधवारी हे ।

कीरतन रो चीणी रो सीरो'र पछै पांचू मिठायां ही । चरका फरका रो पूरो इन्तजाम करयोड़ो हो, न्यातियां रै ठैरण खातर डैरा दिराय दिया । मांचा गुदड़ा भैला करण रो काम छोगला नैं भुलाय दीयो हो । छोगलो वैला माथै आपरो काम पूरो करयो । न्यात रा मिनख भैला ह्वेण लागा'र गांव में मैलो ह्वे ज्यूं ह्वेगो ।

ईं गांव रो मास्टर'र हिरजी ठाकरांरा कंवरां नैं समजायाहा क थैं मौसर मत मांडो । ईं में कीं कोणी मिले ! गांव री स्कूलड़ी नैं दिणाय'र अमर नांव करद्यो । कंवर नीं मानीं जद हीरजी आंख पलटी'र बोल्या—कंवरां थैं मोसर करयो तो म्हूं थांणे लियावु'लो । हीरजी थाणा रो डर वताय'र आपरै गेलै लागा ।

गांव रा सरपंच'र पंच ठो कांसा करता हा अर पटवारीजी अमल-तमाखू-चाय रो इन्तजाम करण में लागोड़ा हा । कीरतन री पंगत बैठीं'र दो च्यार सिपाईड़ां नैं लै'र थाणदार आयगा । पाटवी कंवर भौमजी थाणादारां सूं जैमाताजी री करी'र कांईठा कीं फूक दी क सिपाई तो पुरसगारी करण लागगा'र थाणादार पोल में जा डेरो दीयो । हीरजी जाणगाक कंवर सूं थाणादार मूंक लेली । हीरजी रात्यूं रात ऊंट चढयो'र तहसीलदारां नैं जाय जगाया । तहसीलदार जीपड़ी मंगाई'र आयगा ठांणे । ठांणे आया जितरी जैज लागी पिण सीसी में उतरतां जैज नीं लागी । तहसीलदार पौल में बैठा सिगरेटड़ी रो कस ताणे हा । हीरजी फट जाणगो । हीरजी गल्यायोड़ा दो अवसर रदी निसरग्या । हीरजी पाछो दौड़यो'र एस. डी. ओ. सा'व ने कह्यो । सा'व इसो मोको क्यूं चूकता । फट जीपड़ी चढया । आयगा ठांणे । बुलाय भौमजी नें'इ कहयो :—भौमजी ! मौसर बंद है । थांनैं ठा कोनी कयँ ? भौमजी बोल्या—सा'व थोड़ो-घणो ख्यानड़ो तो हो । जद एस. डी. ओ. सा'ब बोल्या—तो थैं थारो गुनो मानण नैं त्यार हो । भौमजी कह्यो :—सा'व एक नीं च्यार बार गुनो मानण नें त्यार हूँ । म्हूँ एकइ नीं तीन न्यांता करी है । पैली म्हारा आपजी री, बीजी थाणादारजी री, तीजी तहसीलदारजी री न्यात करी हैं । अबैं चोखो मोको मिल्योक आप पधारगा । म्हारो गुनो माफ करावो सा । एस. डी. ओ. सा'व बूझ्यो—ए थैं किया करो ? भौमजी कह्यो—आं नैं रिपड़ा दे'र काडया हा । आप पांचसौ रोकड़ा लेज्यावो । सा'व जाण्यो-किणींरो कर्योड़ो कामड़ो है । सुधरै नीं तो बिगाड़णो चोखो कोनी । फैर लिछमी रे लात मारणीई चोखी कोनी । रिपड़ा खूंजा में घाल्या'र लिख्यो—"ठाकरां रे लारैं बिरमभोज करयो हो, मौसर नीं हो । ईण में भौमजी'र उणांरा भाई राजरो कायदो नी तोड्यो ।"

सा' व गिया परा । न्यात बिखरगी । भौमजी नैं ठुकराई री पाग बंधाई । बीजैं धाड़ै मास्टर भौमजी नै कह्यो :—ठाकरां ! थांरा गांव आली स्कूल भौंजोगी पड़ी है, थैं इण मौसर आला रिप्या लगावता तो स्कूल ताजी बिणज्याती । भौमजी बोल्या—मास्सा'व ! थां सांची फरमावो हो पिण इसी च्यार न्यातां कोनी ह्वेती । थैं तो कैवता हा' मौसर बंद है । ओ देखो चोड़े-धाड़ैं म्हूँ कर लियो । मास्टर 'मौसर बंद है' सोचतो सोचतो स्कूल गियो परो ।

राजस्थानी कविताएँ

शारदा वन्दन

महावीरप्रसाद शर्मा

माणक मोती तट पर आवें मा, हिवड़ै सागर झाल दे ।
झल मल झलकै बढ़ै उजालो, ज्ञान दीवलो बाळदे ।।
म्होर ढलै ना ठबको खावें, छंदा की टकशाल दे ।
सोन चिड़ी सी कविता सोवै, सरवरियाँ री पाल दे ।।
देख्यां तांई भर्‌यो खजानों, भाव पोटली खोल दे ।
शबद शबद पर हिवड़ा रीझै, सुघड़ सलूण बोल दे ।।
झुक झुक मुजरो करू घणू, मा आंगण ड्योढी खोल दे,
वाणी फूटै स्वर गूंजै मा, गीतां को रमझोल दे ।।
गोतै गोतै लाल मिलै मा, इसड़ो जश को ताल दे ।
जिण घड़ियां मे कविता ठिठकै, उण घड़ियां न टाल दे ।।



अरदास

(१)

थकगा नैण उडिकतां, बादल आज्या रै ।
कि बैरी आज्या रै ।।
चिकगा झूमर टेवटा बाजूबन्द री लूम ।
उजड़्या डांगर टापरा बाण्यां कै भेली टूम ।।
काल पड़ैलो जोरको भैम जगत नं खाय ।
बिन बरस्या बादला ईमान भागतो जाय ।।

गरज हठीला जोर सूं अम्बर में छाज्या रे ।
कि बैरी आज्या रे ॥

(२)

फीको पड़ग्यो तावड़ो धूल चढ़ी गिगनार ।
तड़फै जीव उजाड़ रा जोड़ां सूखी गार ॥
रोवै पिरजा बापड़ी आंख्यां आंसू जांय ।
बिन बरस्यां बादला कै बालू माटी खाय ॥
मरु कै पाखी मांग्यां नं पाणी प्याज्या रे ।
कि बादल आज्या रे ॥

(३)

टीबां सूक्या फोगला बणी निसाई रैन ।
धरती तो हो गई दुहागण राहय बांझड़ा नैन ॥
थांरे र प्यारा बादला लग चातक रो हेत ।
थांरे खातर करे कड़ाई चेत बादला चेत ॥
या धरती रो नाम करण री सोगंद खाज्या रे ।
कि बैरी आज्या रे ॥

★

सांझ

आयां मानों घूंघट काढै जाय तावड़ो दूर जी ।
गोरड़ली रै मांग में सूरज भरै सिंदूर जी ॥
झालर बाजै देवरै रूंखां पाखी आवैजी ।
धूल चढै गिगनार में पाछी राभूयां गावैं जी ॥
सिर पर धाम घरोटिया गीतां री रमझोल जी ।
घावै घूमर बावली नगाद भुजायां रो ढोल जी ॥

हुकै री धूंग्रां उड़ावता ग्राया करस्या ग्रौर मजूर जी
सांझड़ ली री मांग मं सूरज भरै सिंदूर जी (१)

हरे रूंख पर सूग्रटा कागा सूखी डाल जी ।
खुर सूं मांडै माडणा गायांरा लंगार जी ।।
थम थम काडै तापड़ा टोरड़िया ग्रलोल जी ।
टींगर खेलैं गोखै वूढा वैठ्या पोलजी ।।

वण नं फिरै रिझावतो लाम्वी पांखों रो मयूर जी
सांझड़ली री मांग मं सूरज भरै सिंदूर जी (२)

चरखो मेल्यो ग्रोवरै तुलसां जोयो दीयोजी ।
गीत सांझ रा गावतां हरख मनावै हीयो जी ।।
वहू का नैण उतावला रै रै वाग्रर झांकै जी ।
चमकै मुखड़ो, चांद सो, वलद घूघरा वाजैं जी ।।

लाज सतावै सास की पण मन वैरी मजवूर जी ।
सांझड़ली री मांग मं सूरज भरै सिंदूरजी ।। (३)



भोर

सांवर दइया

भोर री वेला
रसियो सूरज
चोरी-चुपकै सूं आ'र
कर न्हाख्यो आभो लाल !

जाणै कोई बहनोई
होली खेलण रै मिस
साली रै गालां माथै
मसल दी हुवै गुलाल !

सावण री बादल्यां

सावण सुरंगो
आभै में खिड्योड़ी
घटाटोप बादल्यां काली !

जाणै गोरड़ी कोई
मसल न्हाखी हुवै
आंख्यां काजल आली !

झांसो

पाणी री छांट को न्हाखी नीं
कई दिनां सूं चमकै है वीज
अर गाजै हैं बादल कालो !

आ तो हुई आ ही बात
कै कोई घरै बुलावै आपरै
पण जावां जद लाधै तालो .

थै जाणो हो

थै म्हांनै जक को लेवण दो नीं
थै जाणो हो—
जै म्हे अराम सूं रैवण लागग्या तो
थांरी नीन्द हराम हुय जावै ला !

कोयलो इत्तो कालो को हुवै नीं

थै घड़ी-घड़ी म्हारो अपमाण ना करो
अपमाण सैवण री भी अेक हद हुया करै—
थै आ ना भूलो ।
थां रै ई थप्पड़ रो जवाव
अवै हूं भी थप्पड़ सूं देवूंला ।
[डावै गाल माथै थप्पड खा' र
जीवणो गाल थांरै आगै मेल' र
हूं गाँधी को नीं वणणो चावूं !]
थां रो टेरी कोटन रो सूट
वाटा रा चमचमांवता जूता
रंगील टाई अर चस्मो
ई जुग री फैसन हुवैला
पण खादी रो चोलो अर पजामो
घसीज्योड़ै तलां आली चप्पल
हूं भी पैर्‌या करूं हूं ।
[हूं नागो कोनीं !]

चेम्बर में धांगी कुरसी माथै पंखो चूवै
घण्टड़ी बजांवता ही
चपड़ासी हाजर हुवै।
पण सुणो—
हूं भी च्यार टांग्यां आळी कुरसी माथै बैठ्यो हूं।

मैं हीरा नहीं
ग्रेनाइट नहीं
पण हूं भी 'कार्बन-कुल' रो हूं।

म्हूं कोयलो हूं
अर याद राखो—
कोई भी कोयलो इत्तो काळो को हुवै नीं
कै जळ'र भी लाल नीं हुवै !

दो छोटी कवितावां

भगवतीलाल व्यास

आग

बलबलता आग रा गोला
मूठ्यां में दाब्या
आपां वणी छन
चौराया सूं
दौड़्या हा
म्हूं नीं जाणूं के
थां वणी आग सूं कई कीदो
म्हारे ताईं आग रो
मतलब है
बलबो, बलबो अर बलबो।

आतमा सूं

ए सुनैणी
ट नेड़ी
एक प्यालो ले जहर रो
साथ पी ल्यां।
कई कैवे ?
आतमा है यूं
र रो प्यालो
अमर कांनी करै ?

घणी ग्राछी वात
थोड़ी वैठ तौ जा
'ग्रातमा' म्हारी
ग्राज थां सू वात करणी है
पूछणो है पतो ग्रमरत रो
म्हनै भी तो वो
ग्रसर कोनी करै !

*

म्हारौ गाँव

रामेश्वर दयाल श्रीमाली

कठैई कीं तो को वदलियौ नीं
म्हारौ गाँव
वठे रो वठे इ
वेड़ो रो वेड़ो है ।
वै री वै
वगारा हुयोड़ो वाघरो पैरियाँ
गलियाँ
चौंतरा रा अन्तरेत्रा लिया
एक सूं दूजे वर रा डोढ़ा लेपा जोड़' र
सावतरी दरोगरा ज्यूं ऊभी है
जिरणे कदे ई
वगत मांडई मांडई दारू पावतो
अर वा दाँत भींचती
वा इज आज
लीर भारण हुयोडो घाघरो पैरियां
पिरणघट माथै वेवड़ी—वेवड़ो हुयां ऊभी है ।
काररण,
जे इकेवड़ी उभी रै,
तो कढ़ती डोल रे भोटा में
कीं देखरणी वाकी नीं रेवै ।

कठैई कीं तो को बदळियौ नीं
पैला ज्यूं आज ई
हर घर री ओळ में देवता है
अर हरेक घर रे लारै ऊकरड़ो है
हरेक घर रै तुळसी थानें दीवो बळै
अर हरेक चूल्हा में
धान्नै कुमिजोड़ी है
अजै
सोमवार नै सिवजी रै थांनरै
आन्धा नांवै
आन्धा दिन रा भूखा सिनख
सनि-मंगळ हड़मान रै तेल चाढ़ै
नाचड़े नवीजियोड़ा भैरा
निमाणा टंकोरा बजाडै
गूंगा मनतां रा सिनख
अर
बडी-छोटी पर्व सूत
हर्मोळी पत्ता पत्थर
म्हारै देस रा मना समाजवादी—
गू मना
गांडला सीरो सुनी रै लारै ममता भूरै
आ भी मादे नै
छेवट तान
सोन डौली मर भूरी
अर मुरजार हौंतरा साटला म्हारै ।
कठैई कीं को तो बदळियो नीं

मिनख केवै
के जुग पलटियो है
आँधा है म्हारे जुग रा मिनख
सुणी वात साँची मानै
म्हाने तो इतरो इ ठा है
के कांई ठा कांई
आंधा ने सकरकन्द कै' य' र
भिलाय दियो है।
वीस बरसां पैली
ठाकर छठी ढुगली लाटता हा
अबै आध लाटै
जद मरियल घोड़ी चढ़ता
अबे कारां चढ़ै
जद काची ईटां रे धुड़ियोड़ै रावलै में
मूंज रे मरियल माथा माथे
लौ रे पोले री लकड़ी लियां सूवता
अबे तिखंडे मै' ल में
पलंग माथै वन्दूक लियां पोढ़ै
जद राम सूं इ डरता अर दरवार सूं इ
पण अबै
डर—भौ नांव
वां रै सवद कोस सूं वारे फेंक दीनो है।
चिलम भर ' र कोई इ ठाकर वण सके
अर एम. एल. ए. री घणी इ चिलमां
आपरो खीरो

जनता रै मूंडा माथै मैल गाळियो है
मिरणञ्चन है, चाड़ पञ्च हैं, आट पञ
माथे री पटिया में थोड़ो तेल
अर घणी धूड़ घालियां
कोई तो नार आगर पढ़ियोड़ो छोरो
गोनी माथे चुरगट्टू पैं' र' र
ना री होटल माथै बैठ
नालनी छोरिया नै ताक-ताक
फिगा नै ई बजनी नाल काढ़ मर्कै
अफसरा री हाजरियो बग' र
बाबू आ नै सिगरेट पाव
तीजै दिन नवो ठाकर बण ना है।

कठैई री नो नवलियां री
म्हारो गांव
नांग जी री पील हाल भारी है
ठाणना हाल ठाणा है
सिग्ना हाल बुंटियां बाटे है
मरणो अबै मुदी राम कारो
ओछो हाल नक आचारी है।
म्हारो गांव
नठे रो नठै ट
रो रो येरी है।

*

आपो ओलख

विश्वम्भरप्रसाद शर्मा "विद्यार्थी"

मोटो बोर
गोल मटोल
गोरो निचोर
मीठो गटू' क
लाल चुट्ट
मुंडो काढ़ै
पत्तां ओलै
इन्नै झांकै; बुन्नै दिखै
टाबर बोलै—
"बा ! देख : बा बूढाक"।
टाबर-टींगर भेला हुग्या
भाटां का सहीड़ उपड़्या
बूढ़ा-बडेरा सागै बोल्या—
"एक बाबड़ै खातर भाया
कत्ती' क खोपर्यां भच्चीड़ उपड़्या।"
गेलै बगतां कैई कियो—
"आछ्या फूट्या थांका भोगना"।
कैई ! टींगर बणां कूटीज्या
कैई' भाज्या
कैई ! लुकग्या
कैई ! कियो "म्है हा कोनी !"

सुकरात जै' र पियो
ईंया ही मरी—
दुनियां की सांच
मरतां मरतां
वडेरचारो राख्यो।
जीतां वै रोया
जगती हनी
मरयां जगतो रोयी
वै हंस्या
जुग हंस्या।
लोग वांनै
पैली मार्‌या
पछै पूज्या
आ ! क्यांकी जगती
आ ! कै जुगती
कीं ! कोनी समझ पड़ी ?
लोगां की कैवत में—
"ओ ! वडेरचारो है।"

*

टूंपो

कुण करै
अर—
कग सकै
ओतो—

हाथ धोओ
मेरे ! पीओ
म्हारे पाप्रा ।
कृपा, देवे !
कृपा, ह मेवे !
जको आ केवे
गुणो ! जुग देवता
वो ! ही नागण नेता !

*

समाज

भूख की भीड़
भोग की भीड़
मेला हुआ—एक जगा
ओ ! कै भागो ?

चन्द्र संदेस

नृसिह राजपुरोहित

थूं संकर रै सीस पर
रूड़ौ करतौ राज
किम मिनखां रा पगलिया
थां पर पड़ग्या आज ? ।।१।।
चन्द्रमुखी विलखी फिरै
विलखा फिरै चकोर
कमोदणी कुम्हलायगी
चलै न किण रौ ई जोर ।।२।।
पोल अपोलो खोल दी
चादा थारी आज
तो ई चमचम चमकतां
आवै थनैं नीं लाज ।।३।।
म्है धरती रा मानवी
थूं सुरगां रौ देव
अमरा पुर में पूगणौ
म्हारी जूनी टेव ।।४।।
जुग जुग सूं नह जांणियौ
थारी अवखो ढंग
छेवट भेद उघाड़ियौ
रंग मांनखा रंग ।।५।।
नह थें अहल्या नें टगी

निष्ठा नैं नी बेचूं

भँवरसिंह सहवाल

गीतां नैं
विकवाणो चाहो
विकवा द्यो,
पण भावां नैं नी बेचूं ।
काया नैं
विकवाणो चाहो
विकवा द्यो,
पण प्राणां नैं नी वेचूं ।
आ हिवड़ो तो द्रढ़ आसा नैं अर्पत है;
आ जीवण तो विस्वासां नैं अर्पत है;
मूरत नैं
विकवाणो चाहो
विकवा द्यो,
पण निष्ठा नैं नी वेचूं ।।

☆

जीवण जोत जळै है

कुण कै
परळै रो समदर

राज रो नोकर

एक तारीख री
उडीक में
अलसायोड़ो फूल ज्यूं —मानखो

इमानदारी

पोथ्यां में दब्योड़ी
अणकाजु भासा ।

*

ऊं-करती चाली गोरड़ी
सासरिया री गेल,
पामणा लेवण आया जी । २

मायड़ काकी भाभी आई,
आई बेनड़ भुआजी ।
पास पड़ोसण सबही आई,
आई मामी मौसीजी ।
बाबल काको वीं रो मलग्यो,
नुवी ओढ़ाई ओरणी ।
गले मिलतां हियो भरग्यो,
घूघट भीज्यो गोरड़ी ।

ऊं…ऊं…करती चाली गोरड़ी,
सासरिया री गेल,
पामणा लेवण आया जी ।१।

★

मनसूबा उजड़ गिया

गाँवां री चोपाल'र
शहर रा चौराया पर
भेला हो'र लोग बतलावै
माथा मोल दे'र
देशरी आजादी लेवा, अर
उगरी रक्षा करवा हालां रा
मनसूबा ही उजड़ग्या।
क्यूँक इसान तो आज भी
धर्म री दीवारां,
मजहबां रा कठघरा,
अर भांत भाँतरी जातां रा सीखचां में
कैद होयर
नफरत रा दायरा में
घुटी घुटी साँसा लेर बेबसरी
जिण्दगी जी रियो है।
आपणां ही हाथां सूँ
जहर पी रियो है।
पण कुण रोके उँन ?
टोक कुँण ?
अब तो असी दीखै कि
सारा देश हाला ही
यां पिजरा में कैद होवान ही
या, आजादी लीनी है।

मनसूबा उजड़ गिया

गाँवां री चोपाल'र
शहर रा चौराया पर
भेला हो'र लोग बतलावै
माथा मोल दे'र
देशरी आजादी लेवा, अर
उणरी रक्षा करवा हालां रा
मनसूबा ही उजड़ग्या।
क्यूँक इंसान तो आज भी
धर्म री दीवारां,
मजहबां रा कठघरा,
अर भांत भाँतरी जाताँ रा सीखचाँ में
कैद होयर
नफरत रा वायरा में
घुटी घुटी साँसा लेर बेबसरी
जिण्दगी जी रियो है।
आपरणाँ ही हाथाँ सूँ
जहर पी रियो है।
परण कुरण रोके उँन ?
टोक कूँरगान ?
अब तो असी दीखै कि
सारा देश हाला ही
याँ पिंजरा में कैद होवान ही
या, आजादी लीनी है।

पन्ना री चालां भी ईं धरती री थाती छे :
भामाशा तो वाण्यो छो,
धरतीरा बचावण ही,
उन्हें खजानो भरद्यो छो,
हाल तो काल्ह ही, होश्यार ने,
शत्रु रा माथा काट काट,
माता रो भाल सजायो छो।
तो थें भी,
म्हारो सुहाग बणबा चावो तो,
सांगा, परताप और चूण्डावत बन,
धरती रो करज चुकाजो,
माता रो दूध पुजाजो।
मूं भी सती पद्मनी,
श्रो हाडी रानी बन,
शत्रु पर कूद पडूंगी
दुश्मन कूं मार भगाऊंगी
तू म्हारो चूण्डो,
मूं थारी हाड़ी,
आपण दोणू जणां,
ईं धरती रा फूल बणां
हंसता गाता मिट जांवा,
ईं धरती धूल बंणा।

☆

म्हा नगरी में
मिनखां रो पलाव

ईं पलाव में
मैं भी वैतो जावूं
दूजां सूं आगै निसरवां तांई
दूजां रा छुलेड़ा खूंवा पर चढ़'र
छाजा पकडवा तांईं

ओपरा उणियारा मेवा में
म्हारो ओपरो पणों
म्हारै सू झूझै
आतो सै जाणै
कतरो ओखो है
अपणै आप सूं जुद्ध करवो ।

निरणावासी छीयां
धोवीरा सूकता गाभां पर
पेट पलाण्यां रिगसै

मैं देखूं हूँ—
आखी नगरी नै
खामोसी री रिजाई रा
छिण छिणां खोला में वड़तां
काला गूमडा सो कीं
मांय मांय जल बलावै
बार निसरवां तांई ।

भीतां रै अेवड़ छेवड़
पड़दा ई पड़दा

चार मुक्तक

वायरिया गत जेजड़ली नै कदे न कोई नावड़ै ।
ई मनड़ा री वालदली नै एक ठोड नी आवड़ै ।
आ धरती री रीत'क आयो उणनै पडरी जावणो
जाय जको इण जग में पूठो कदे न कोई बावड़ै ।

रूसी जेज मनावूं मैं क्यूं आज करूं जुग री मनवार ।
मधुरा गावूं गीत मनावूं श्रै जुग रा मंगल तीवार ।
प्रीतडली रो सूक्यो सरवर आसा रा भुजण्या चितराम
मोत मालिये आज करूं क्यूं जीवन रा गीलू सिणगार

इण सपना री सोन चिड्यां रै कदे न उगिया पांखड़ा ।
आता आता ई आ पूग्या जावण रा दिन सांकड़ा ।
पीड़ा कदे न परणी मुलकण आई ही मुकलावली ।
मांड दिया क्यूं म्हारै मांथै विधना इसड़ा आकड़ा ।

छिण मं बरसै मेह'क चालै कदे क बलती धूनड़ी ।
सुरमू सारै साध'क पाकै पल मं पीड़ा गूमड़ी ।
जिणरो ठलको पोत दाभग्या पल्ला जुगनी आग मं
आखो जीवन भांत भतीला डबकूल्यां री चूनड़ी ।

*

पगडांडी

पगडांडी
जो चालतां चालतां सड़क
और सड़क सूं राजमार्ग बणगी है
आ बात भूलगी है कि
वीं नै यो सम्मान दिवा वाला
वीं नै धूल सूं सूरज बणावा आला
वीं कै दायां बायां खड़ा हजारां विरछ
आपणू अस्तित्व मिटा दियो है
आपणी जड़ा खुदवा दी हैं
वीं नै यो रूप देवा नै ।
घणा करा क छोटा लाम्बां रास्ता
आपणू 'स्व' विलीन कर दियो है
वीं नै 'चौड़ा' वा में ।
वीं नै याद है
केवल आपरो वर्तमान
आपरो नुवों पद
आपरो बड़प्पण
और खुद रो अतीत भूलकर
जो काली नागण जट्यां
वल खाती अभिमाण सूं
पसरगी है ।



राजस्थानी व्यंग तथा रेखाचित्र

दरपण री करामात

ओम अरोड़ा

लोगां रै विचार में दुनियां री सह स्यूं भ्यानक चीज एटम बम है। इचरज री बात है लोग दरपण नै कांई ठा कियां भूल्या बैठ्या हैं। एटम बम स्यूं तो आज तांई कुल मिला सू दो ई शहर निष्ट हुया हैं, दरपण स्यूं हुयेड़ै विनास रो चांको श्री लागीजणों मुस्कल है। एकलो महाभारत नै श्रीं ल्यां तो कितरो भंकर जुद्ध हो? पांच हजार बरसां पहलां माच्योड़ै श्रीं जुद्ध री भंकरता स्यूं डर्‌योड़ा केई कवि तो अजे तांणी वींरै उपर वीर रस री कवितावां लिखें हैं। फिल्मां बणावण हालां अजे तांणी फिल्मां बणावें हैं कथा वांचणियां री पीढयां री पीढ्यां श्री री कथा बांच-बांच र खपत हुगी पण महाभारत री भंकरता रो चितराम अजे तांणी पूरो नहीं हुयो।

जाणों हो महाभारत रै लारै बवाल कांई हो? दरपण। न द्रोपती रै महलां में दरपण जड़ीजता, न दुर्योधन ठोकर खावतो न द्रोपती वीं नै आंधै री श्रोलाद कैंवती अर न महाभारत रचीजतो। पण जठै दरपण हुवै बठै भलार कठै? पदमणीं रो किस्सो श्रीज ल्यो। दरपण नीं हुंवतो तो राणों अलाउद्दीन नै साफ नीं कय देवंतो—"छि म्यां चाऊंला मिस्टर अलाउद्दीन! गिरोज पदमणीं श्राप स्यूं नहीं मिल सकैली।" किस्सो श्ठै ही खतम हु-जावंतो। पण श्रीं दरपण पर फोट पड़ी अर रणवासां में उल्लू बोलया लागा।

कांई ठा? श्रीं दपण नै बणांवण हालो कुण रयो हुवैलो? पण इतरो निस्चै है, श्रो काम नीं श्रीं मिनख रो तो करामत श्रीं नहीं है। का तो

ओ कीं ओं लुगाई रो करतब है का फेर आ करामात की ओं शैतान री है। है। 'इव' अर 'आदम' हाली कहाणी पर विचार करां तो लागै जरूर कठै ओ सूनो लागो जी है ? कहाणी में सेब री जिग्यां दरपण हुंवतो तो कहाणी किसरी -'रशनल' बण ज्याती ? 'इव' सुन्दरी ही। आदमी बी—'हैन्डसम' रयो हुवै लो ? भगवान ज्यां नै 'इडन' रै बाग में भेज्या कै जद तांणीं ज्यां नै आप री सुन्दरता रो ज्ञान नहीं हुवैलो ऐ सुख स्यूं रवैला। पण शैतान-ज्यां नै तबाह करणा हा। जिका कर्‌या। शैतान 'इव' नै बीं जिग्यां रो ठिकाणो बता दियो जठै दरपण टिकै हा ! 'इव' नै दरपण हाथै लिगन आयो, कंवणों चाइजै दरपण में आपरो नोवणों मूंडो लिगन आयो। बीं निरखी मेल' र कयो हुसी ?-'हाऊ ब्युटी फुल ?" ओं रै उपरान्त बीं आदम नै बो दरपण-दिखाई हुसी ? निजार ओ 'क जलस्यूं ले' र अब ताईं मिनख कमस्यूं कम दिन में पांच दस बोरियां दरपण रै साम्यां जरूर जावै। 'इवां' रो पछै कंवणों ओं कांई ? बापड्यां आपरै पर्सां में ओं दरपण घाल्यां फिरै। लुगाई नै 'इस्ता-टल' करण में जितरो हाथ दरपण रो रयो है बितरो सिणगार रै कवियां नै छोड'र दुजै कीं ओं रो नहीं रयो।

लुगाई जणां दरपण रै साम्यां बैठ ज्यावै तो घण्टां मिन्टां री मानणो ओ कांई है ? बीं नै सदियां तांई तो ज्ञान नहीं रया करै। अजन्ता री गुफा में एक लुगाई ल्हारली केई सदियां स्यू दरपण रै साम्यां बैठी आप रो 'मैकअप' सुधारै है। झूठी मूठी बिड़दावण करण में तो दरपण रा मुकाबला ओ कांई ? जे कोई लुगाई दरपण रै साम्यां बैठ' र बीं नै पूछै—"ब्यू टियर दरपण ? हूं थानें किसी क लागूं हूं ?" दरपण चट राफां तिड़का देसी- वाह ! कोई बात है थारें सूणांपे री, ओं मामले में तो कालीदास री शकुन्तला बी थारै मुन्डागै पाणी भरै है। लुगाई लट्टू हो' र फेर पूछै ली—हैं रे कांई हूं सच्चाई शकुन्तला सिरसी लागू हूं ? दरपण मस्को लगा र कहसी—अजी, कीं री शकुन्तला ! थारी होड तो बीं री मा मैनका ओ नहीं कर सकै। आ ओ बात जे लुगाई कीं भलै आदमीं स्यूं पूछै तो उथलो हुवैलो "देवी जी, भरम कांई है थानैं ? जे मुन्डै पर स्यूं ओ पोडर सोडर थोड़ो उतारदयो अर ऐ मुंहगा कपड़ा जे एक खानी राखद्यो तो लालकी भंगण री भैण लागस्यो। मुंह दिस्सै है नीं छींट रो बट्‌ओ हुवै ज्यूं ." पण दरपण इतरी सांची बात कदात ओ नहीं कवै लो'बीं रै आगे तो जे काली कलूटी भंगण बी उभी हो र बूझै क' हूं किसी' क लागूं हूं ? तो बीनै बी वो सुरग री परी ओ बतावै लो। सार ओ क' दरपण लुगायां रो चमचो हुवै है।

दरपण रो अर साहित रो वी जूनों मेल है। जे किणीं राह बगतै कनै स्यूं पूछो कै सिर दर्द री दुवाई बतावो, तो झट कवैली "एस्प्रो।" इयां श्री जे वीनें पूछोगा कै साहित कांई है ? तो कवैलो साहित समाज रो दरपण है। साहित री आ 'पैटेंट' परभाषा है जियां कै एस्प्रो सिरदर्द री 'पैटेंट' दुवाई है। श्रीं परभाषा नै सुण' र म्हारै दिमाक मे एक श्रोर अलबाद उठ्या करै—क' भाई साहित जे समाज रो दर्पण है तो फेर साहितकार कांई हुयो जिको समाज नै-मूड' र आप रो उल्लू सीधो करै।

दरपण साहित नै वी मोकली चक्कर घिन्या करवाई है। रीतिकाल री तो सोह रो सोह साहित दर्पण रै श्रेड़ै गेड़ै कूंडिया काट तो लाधै। नायिकांवा आप रा सह भेद दरपण रै साम्यां श्री परगट करती ही। कवि लोग साम्या बैठ्या मांडता रैवता। केई कवियां नै श्रो काम लुक छिप' र वी करणो पड़तो। खास वियां कवियां नें जिकां री गायणां कीं घणी नखराली ही। घणखरां' क रीतिकाल रै कवियां कर्‌यो वी वोश्री काम है जिको' क दरपण नै करणों चाइजै। म्हारै मनग्यान तो श्रीं काल नै दरपण काल कयो जाणों चाइजै। वियां भगती काल रै कवियां दरपण स्यूं केई काम लियां हैं। सूरदासजी कृष्ण जी नें केई बार दरपण रै साम्या खड़्या कर्‌यां हैं। तुलसी दासजी दरपण रै चक्कर में घणा नहीं पड़्या क्यों' क सीता जी वनवास आवता दरपण श्राप रै साथै ले ज्यावणों भूलग्या हा। वियां रामचन्दर जी स्यूं दरपण ल्या देवण रो घणी जिद वी नहीं करी, क्यूं' क जंगल थकां नदी नालां रै पाणी मे श्रीं श्रापरो झावलो देख' र काम निसर ज्यां तो।

श्राजकाल रा कवि तो बापड़ा आप श्री लुगायां ज्यूं घणखरो' क दिन दरपण रै साम्यों श्रीं बैठ्या रवैं हैं सो दरपण प्रयोग वियां साहित में कीं कम श्री कर्‌यो है। फेर श्री बार त्यूहार दरपण रो जिकर श्रायो जरूर है। एक नूंवै कवि तो आप रै कविया संकलन रो नांव श्रीं 'मायादर्पण' राख मेल्यो है। जे श्रो कवि भाई नें तुक मिलावण री ठरक हुंवती तो श्रीं री तुक 'पितृतरपण' स्यूं सागीड़ी मिल ज्यांवती। हिन्दी साहित रै एक धाकड़ लिखार 'श्रश्क जी' रै उपन्यास रो तो नांव श्रीं है—'शहर में घूमता हुश्रा आईना'। श्री शीर्षक नै पढ़' र म्हानै पहली बार ठा पड़्यो कै शहर में चोर, उचक्का पाकिटमार श्रर पत्रकार ही नहीं घूमैं बल्क आईना (दरपण) वी घूमैं है।

केई दरपण मजाकिया भी हुश्रा करै। म्हारै कनै एक दरपण है जो

म्हूँ बी सैलूण में गियो !

ओम अरोड़ा

भाषा शास्त्र रै विदवानां नै स्यात ग्रीं वात रो ठा नईं हुसी कै नाई शब्द री उत्पत्ति कीं शब्द स्यूं हुयोड़ी है। म्हारै विचार में नाई शब्द 'उई' रो विगड्योड़ो रूप है। इतिहासकांरा नै ठा हैं कै पत्थर युग रा नाई लोह री जिग्यां पत्थर रै पाछणां स्यूं सुंवार कर्‌या करता। अर सुवार कराण हालो (जणा वै पत्थरां रै पाछणां स्यूं इयां जीवतै री खाल काढ्या करता) पीड़ स्यूं उई ! उई !! करतो। म्हारै विचार स्यूं आगै चाल'र इयाँल कै उई, उई, करावण हालां रो नांव ईं'ज नाई पडियो। वियां केई विदवानां री विचार ओ वी है कै नाई शब्द जरूर कसाई रो बीगड्योड़ो रूप है, मतलव कै नाई रा पुरखा कसाई हा। पछैं जावतां जिकै लोगां जिनावरां री जिग्या माणसां नैं वाढ़णा सरू कर दिन्या वै नाइयां रै नांव स्यूं मानीजता हुया।

थे स्यात हिरान हुर्‌या हुवो, कै चाणचक ओ शब्द शास्त्रीय इतिहासिक ज्ञान म्हानै मिलियो कठै स्यूं ? वात दरसल में आ हुई कै म्हारी मुलाकात एक दिन वीं नाई स्यूं हुगी जिको 'मोहनजोदड़ो' री खुदाई में जीवतो निकिलियो हो। ओ नाई कोई अच्छी ठाटबाठ सजियोड़ी दुकान में नईं, बल्क सड़क रै किनारै एक तीन फुट ऊंची भींत रै उपर बैठ्यो हो। भींत रै एक खानी एक टूट्योड़ी सी कुर्सी पड़ी ही अर भींत रै उपर दो ईंट्यां रै सारै एक सीसो टिकायोड़्यो हो, जिको कीं मजनूं रै सीसा-ये-दिल री दांई मोकली तरेड़ां खायोड़ो हो। कमाल री वात आ उपरां स्यूं ग्रोर ही कै म्हानै बठै कोई राछ, कतरणीं पड़्यो नईं दिस्यो। अबै थे ओ बताओ—

—वाह, साहब ! पुराणै री बात वी आछी चलाई। ओ पाछणों तो म्हारै सूरमै दादो सा नै राणी झांसी साहब तोफे रै मांय दियो हो। वां दिनां म्हारै खानदान रा लोग सुवारां रो काम न कर'र लड़ाई रै मैदान में लोगां री गर्दनां साफ कर्या करता। एक दिन रानी जगां अंग्रेजा स्यूं लड़ण लागर्या हा तो वियांरी तलवार टूटगी। म्हारा दादो सा झांसा सिंह जणा ओ विरतांत देख्यो तो उवां आप री तलवार राणी झांसी नै पकडाय दिन्वी अर आप राणी री टूट्योडी तलवार ले'र तीन दिनां ताणी अंग्रेजां स्यूं लड़ता रैया। राणी वांरी बहादरी पर खुश हो'र वा टूट्योड़ी—तलवार म्हारै सुरगवासी दादो सा नं इनाम रूप देय दिन्वी। ओ पाछणों म्हारै सुरगवासी दादो सा वीं ओंज तलवार रै साचै लोह रो घडायो है। जिकै स्यूं हूं ओं वगत आप री सुंवार ···!

म्हनै वीं री ओं बात स्यूं मोला आना तो खैर पुराणा हुया सो पीसा आकीदो आयग्यो। क्यूं कै म्हैनै इस्यो ओंज लागै हो ज्यूं म्हारै मुंह पर पाछणो नहीं तलवार चालती हुवै।

भाई, आ बात तो ठीक है, पण थे कोई नयो पाछणों क्यूं नही खरीद लेवो ? म्हे पीड़ रै मार्या चिरला'र बोल्या।

वाह सा' आ भी कांई बात है ? नया पाछणां तो वै खरीद्या करै जिकां रा बाप दादा पाछणां दे' र नहीं जावै। म्हारा सुरग वासी दादो सा कह कह मर्या कै जे म्हारै खानदान में कोई कायर ज्याम हो ज्यावै अर वो लोगां री गर्दनां काटण री बजाय लोगां री सुवार करणी सरू कर देवै तो ओ पाछणों वां रै काम आसी। वीं पाछणें ने जोर स्यूं खोचतें कयो।

"तो थे ओंनै थोड़ी सिलड़ी पर रगड़ ही ल्यो।" हूं गांग गा' ' कयो।

"वाह साहब, वाह ! सिलड़ो री जरूरत ही कांई है" बोल्या।

"तो कमस्यूं कम क्लोरोफारम री सीसी तो ··· स्यूं ज्यान छुड़ावण रो मनसूबो बांधतै कयो। पण ··· हाल हुय चुकी ही।' सो भाजण रा नाम्म वी नहीं हा।

मांड्यो अर माथै मार्यो

श्री नन्दन चतुर्वेदी

जनतंत्र मानै छ क हर मनख राजकाज कर सकै छ। राज नै चला छ। चला भी र्यो छ। पैली बात छ क राज सुधारवा की जगां पै बगड़तो ही चल्यो जावै। काईं कोई नेतो ईं कारणसूं चुनाव लड़वा सूं मूंडो मोड़ लैगो क ऊं क भेई शासन चलावा की तमीज को न? काईं जरूरी छ क बेईमानी रोकवा हाला दफ्तर म सभी ईमानदार बैठ्या होवै; कोई भी वां म बेईमान न होवै? पुलिस हालांन में एक भी असो न कढै जो उचक्कांन सूं मल अर रात्यां-रात घरां, दुकाना का ताला न तुड़वा दै? कस्यां कोई मान लै क नसबन्दी का महकमा म रिजक-चाकरी करवा हालां मं कोई भी बाबू क अफसर कै घणी लांबी छोरा छोर्यांन की जमात न होवै? अर एक दरजन सूं जादा टाबरां को बाप कोई कवि 'परवार नियोजन' को परचारक बन क कवि-सम्मेलन को महनतानो छोड़ दै? जद यो सब चालै छ अर धड़ल्ला सूं चाल र्यो छ तो फेर म्हारी ही कोई अकल मारी गी छै जो म्हारी कलम अर आवाज पै अंकुस धरूं?

चोखी तरां जाणै छो क म्हूं अनाड़ी छूं। फेर भी म्हूं मांडतो र्यो। भायलां न काणो क बुद्दू छ पर म्हारी कलम चालती गी। सम्पादक लोग म्हारी रचनान नै फेरता ग्या, म्हूं दूना जोस सूं मांडतो अर भेजतो र्यो। म्हूं जाणै छो क कब्ज जतनो जाडो होवै उतनो ही जोरदार तो जुलाब भी चावै छ!

अतनी बात छी पर म्हूं माँडै काईं छो यो चोखी तरां जाणै छो। झूठ बोलवा की टेव म्हारी जनम की छ पण अतनी बात म्हूं पद्धाणूं छूं क

'छै ताईं आवारा फरवा हाला ऐरा गैरा जो अब एक एक पन्ना का 'पत्तर-ार' बनग्या छा, वै ताईं म्हारा ऊपर तरस खावा लाग ग्या छा। बडा व्हाल्यांन कै नीं दर पर भी पूगवो भारी छो। ऊठी तो पंडान की जमात ही धक्का अर बारै काढ़ देवै छी।

आवा को चाव अस्यो माथै चढ्यो क ऊतरै ही कोनी छो। घणो सोच्यो। अकल का घोड़ा की लगाम जद जोर सूं खींची तो तंडियो अर हणहणायो। वाग्यो क "अरै मूरख तू अब ताईं न समझ्यो। यां पंडांन सूं पछाण कर, वां नूं मगपण बढा। फेर यां की ही आंगली पकड़ अर जजमान की चौखट तणी पूग जा।"

म्हारा भेजा में बात पचगी। म न चमतकार कर नाक्यो। म्हारो दन को दन पोथ्यां कै बीचै ही कढवा लाग्या। घणा अखबार अर पोथियां लोट डाली। बांची एक भी न, बात काईं न काईं घणी पोथ्यां न क लेकै मांडी। एक पोथ्यालो जो 'पुस्तकालय' बाजै छो ऊं मं जतणी भी नुई पोथ्यां देखवा म आई वां की घणी बढाई मांड अर वांका लिखवा हालां क ही पास पुगा दी; साथ म मांड द्यो क थांकी घणी करपा होवैगी, म्हारै भेई आपकी पोथी घणी चोखी लगी सो बात मांड भेजी छ, कोई वडा अखबार म छपवादो, म्हारै भेई तो यां मं गूं कोई पछाणं कोनी। पछाण होती तो म्हूंई छपवा लेतो।

या तदबीर रामजी का बाण की नाईं काम करगी। घणा लेखकां न तो झट सूं ही सही फरमा दी। जो पचार बैठ ग्या वां न कारड डाल अर फेर-फेर कुरेद्यो। फल यो मल्यो क ईं अनाथ कै भेई घणा नाथ मलग्या म्हारो जमारो बणग्यो।

अब काईं छो! यो एक रजिस्टर को मांडवा हालो साहतकार वालमीक बाबा की नाईं मट्टी फोड़ अर ऊवो हो ग्यो। जठी देख्यो उठी ही आपणो नाम चमक र्यो छो। फेर तो दन यूं बदल्या क जो भी डाक आवै ऊ म ही पोथ्यां को ढेर म्हारै नाम आवै। देस का जाणे कुण-कुण जाण्या, अणजाण्या लेखकां, कवियां, क्याण्यां माडवा हालां की पोथ्यां म्हारै पास आवा लागी। म्हारै पास सीतमीत को घर पोथ्यालो, जीं न पढा-लिख्या मोटूयार 'पुसतकाल्यो' बाजै छै, आप सूं आप बण ग्यो।

म्हूं पछाण ग्यो क म्हारो जमानो आग्यो। म न आपणी पराणी मांची मोजां सब फेर नाखी। वां प जमी होई धूल झटकारी। ममपादकां का गेट

कुमांणस

विश्वम्भरप्रसाद शर्मा

गाभै सूं मोगरी बोली—

"डोका म्हारी सांचकली चोटां सूं थारो मैला सूं कालो कढ्यो। चोटां सूं चड़ीड जरूर उपड़े पण च्यानणूं बापरै जनम सुधरै लोगां कै होठां पर गुण गाईजै, मीनखां कै चित्त चढ़'र गुणीजै।"

गाभो बोल्यो—

"गांठ पटक पटक' र हाडका फोड़ गेर्‌या, म्हारै तो दरद सूं अंधेर गुप्प हुगी है तन्नै रंडाप च्यानणूं सूझै है। म्हे थारै कन्नऊं कद च्यानणूं मांग्यो हो। बिगाणी ही बिणाप जतावै है। आगै सार बोलगी तो तूं जाण्यो है।" मोगरी चुप हुगी।

साबण बोली—

"गाभा थातो म्हे ही' क जकी थारै में उजास बपरागो। चिकणास कर्‌यो। थारी जात में तन्नै रळतो कर्‌यो। थारो उमारो सुधार थारी बात राखी। तन्नै म्हारो गुण कदेई नहीं भूलणूं चाइजै।"

गाभो बोल्यो—

"तूं तो म्हारो गुण जबर ही कर्‌यो। कै! कणूं? तूं तो कुन्नणी बल्योड़ा पर लूंण बुरकायो है। बावली! थारै में ही गुण हुता तो लोग थारी काया नै रगड़ रगड़'र पांणी'क थानै क्यूं बुहाता? तन्नै थारो कोनी सूझै?

मीनम बोल्यो—

"भला घरां रा जायोड़ा कीं को तो गुण मानतो । थारै तो सै इकसार । मान स्यूं नै गुण तो म्हारो थै ! घणूं ही कर्यो है न । ईं जमारै में तो नी भूलूं ? आगै की आगै देखी जासी ।"

"दे'र पांड्या आसीस ।" "म्हे कै द्यूं, म्हारी आतमा देसी ।"

आसे-पासे वारु सहरां में कवि पोकरै री धूम मचीजती। व्याव-सावां री टेम में उवांरी मांग घणी वढ़ जावती। न्यूता अगावू जमा हुवीजता। कारण क वरात रै डेरै में एकलो कवि पोकरो ख्याल रचा देवतो। देव कंकाली, अमरसीह राठोड़, स्याहपोस आद धक्कै चढ़ीजै उवींरा'ई वोल डावै हाथ री हथेली डावै गाल पर धरयां अर जीवणो हाथ आभै में उछालता इसड़ै जोर सूं टेर खिंचीजता क आखै गांव रा मिनख भेला होय न तमासा देखीजता।

खरच-काज में भी कवि पोकरै री वूझ कम नी हुंती। जा दिनां वारां गांवां री चिट्ठी फाड़ीजती उवां दिनां मोकला मिनख भेला हुवीजता अर ताराजड़ी रात में कवि पोकरै नै एक तखतो रखवा'र पगां-पाण ऊभो कर देवतां। फेर तो आखी रात उवांरी मीठी लामी ढाल अर तीखै कंठा री सुर-लहरी सूं गुंजीजती। उवीं वखत पर ढोली-ढाढी भी आपरी ढोलक रै खुड़का सूं संगत करीजता। इसड़ी रातां लोगां रै हिरदै में चितराम ज्यूं मंडीजती अर भुलाई नी भुलीजती।

कवि पोकरै नै वार तिवार भी उवींरी विरतवाला सेठ-सेठाणी जीमण रो न्यूतो देवणो नी भुलीजता। एक दिन एक सेठाणी उवांनै जीमण रो न्यूतो भेजियो। देसी घी रो सीरो अर साग-पूड़ी। पोकर जी पालथी मार न जीमे अर सेठाणी घणै प्रेम सूं जिमावै। पोकरो पूरी मांगी पण सेठाणी भूल सूं साग परुस दियो। फेर कवि पोकरै रो कांई डटै! झट जोर सूं वोल्या—

'सीरो तेरो खरखरो कंठा आग धरै।
पूरी मांगे पोकरो (तू) झट दे साग धरै?'

सेठाणी सुण'र चितराम री हुगी। फेर पोकर जी सूं हाथ जोड़ न माफी मांगी अर आपरो पिण्ड छुड़ायो।

एक वर पोकरो आपरै भाई वैजनाथ सूं लड़ पड़यो। जमीन रो कीं झगड़ो हो। आगर डांग वाजी। झूंझणूं वारा वरस मुकदमो चाल्यो। पण मनचायो हुयो कोयनी। जा दिना मोटरा—वसा चालती कोयनी। तारीखां पर पैदल ही जावणो पड़तो।

बिगड़े तीवणां रै सागै हुग्यो ! तैं वहोत रोवी रा रांदया! ठैर ! आज तेरी सतेवड़ी घणी जचा'र करस्यूं । आ मरज्याणां ऊतरी-उतारयां रै साथै बिना तन्नै ढोई कोनी।" इयूं झाल पटक नै गंडक मारण रो डंडूकल्यो इसड़ो वायो क कालिये रो बोबरो फूटतो हुतो पण वाल भर रो आंतरो व्हेग्यो। कालियो तो तगरो छोड़ नै दी दड़ी। वाकी छोरां में एक बरस्या ,सरणाटो सो व्हेग्यो। कालिये री मा दकाल मारी,—"निकलो म्हारी पोल सूं। राम रा सुंवारया वरण वरण रा भेला हुग्या। जे ओजूं पग मांडया तो खोज वाल न्हाखूंगी। थारै मायतां रा लोही पीवो। महारै क्यूं गेज पड़ीजगा।" ई दकाल सूं छोरां री चेतना पाछी बावड़ी अर पलक झपता नै तेतीसा देग्या।

थोड़ी ताल में कालिये रो वाप पोल में वड़ियो अर वोल्यो—"इयो कियारो रोलो हुरयो है ! कालियो ओलमो ल्यायो दीसै।" ,'अजी, थारो वो तीमण जणो कुचमादी है। वास रा सगला टीगरां नै भेला करल्यायो। कैवै, कुत्ती रो मेलो है, तेल गुड़ घालो। रामारया नै ओ ठा कोयनी क समो के वगरयो है। काल मूंडो फाड़ मेल्यो है। वाणियो रीपिये रा तीन पाव दाणा पल्लै में नी घालै। दो जूण दो टीकड़ां रो जुगाड़ नी वैठै। मोठ तो घीव सूं मूंगा हुरया। मन मोस नै पड़या हों। इवकलै सिरकार भी फेमन रो काम नी चलावै। मिनखपणो कीकर रैसी ! इआ सोच'र म्हारो भीतर भिल्यो जावै है। टींगरां नै सीरै री सूझै।"

"कालिये री मा ! टावरा नै काल-सुकाल रो कांई वेरो ! उवांरा तो खेलण-रमण रा दिन है। उवासूं माथा-पच्ची ना करिया कर। ध्यावस्त राख। परमातमा सब ठीक करसी। उवांरो खेल निरालो है। उवां चूंच दी नै चुगो भी देयसी।" कालिये री मा झरण झरण आंसूं टलकांवती चूलै खानी मुड़नै वोली—"कोरो डांडस आतमा में ढूकै कोयनी। चुगो रुलग्यो धूड़ में......सीली धूड़ पिराणहीन—इयरी कूख नूनी सूनी...निपजण नूं टलगी...... वांझ....।"

कालिये रै बापू रै कालजै नै अणचित्यां भावां रै भय रो काठ मारग्यो। उवांरै हिरदै री उगती फसल नै निचांसा रो कातरो कुतरतो जावै है मन रै पानां पर हलवां सरकतो सरकतो......मणधाक.... ।

मोल्यिं रै वाड़ै में टींगरां रो टोल घुचरिया नै लड़ावै। आप आप रै गूंजै में विखरेड़ी सूकी रोटयां रा टुकड़ा लुका'र ल्यावै अर घुचरिया नै

विगड़े तोवणां रै सागै हुग्यो ! तैं बहोत रोवी रा रांदया! ठैर ! आज तेरी सतेवड़ी घणी जचा'र करस्यूं । आ मरज्याणां ऊतरी-उतारयां रै साथै बिना तन्नै ढोई कोनी ।" इयूं झाल पटक नै गंडक मारण रो डंडूकल्यो इसड़ो वायो क कालिये रो वोवरो फूटतो हुतो पण बाल भर रो आंतरो व्हेग्यो । कालियो तो तगरो छोड़ नै दी दड़ी । बाकी छोरां में एक बरस्या ,सरणाटो सो व्हेग्यो । कालिये री मा दकाल मारी,—"निकलो म्हारी पोल सूं । राम रा सुंवारया वरण वरण रा भेला हुग्या । जे ओजूं पग मांडया तो खोज वाल न्हाखूंगी । थारै मायतां रा लोही पीवो । महारै क्यूं गेल पड़ीजगा ।" ई दकाल सूं छोरां री चेतना पाछी वावड़ी अर पलक झपता नै तेतीसा देग्या ।

थोड़ी ताल में कालिये रो वाप पोल में बड़ियो अर वोल्यो—"इयो कियारो रोलो हुरयो है ! कालियो ओलमो ल्यायो दीसै ।" ,'अजी, थारो बो तीमण जणो कुचमादी है । बास रा सगला टीगरां नै भेला करल्यायो । कैवै, कुत्ती रो मेलो है, तेल गुड़ घालो । रामारया नै ओ ठा कोयनी क समो के वगरयो है । काल मूंडो फाड़ मेल्यो है । वाणियो रीपिये रा तीन पाव दाणा पल्लै में नी घालै । दो जूण दो टीकड़ां रो जुगाड़ नी वैठै । मोठ तो घीव सूं मूंगा हुरया । मन मोस नै पड़या हां । इवकलै सिरकार भी फेमन रो काम नी चलावै । मिनखपणो कीकर रैसी ! इआ सोच'र म्हारो भीतर भिल्यो जावै है । टींगरां नै सीरै री सूझै ।"

"कालिये री मा ! टाबरा नै काल-सुकाल रो कांई बेरो ! उवांरा तो खेलण-रमण रा दिन है । उवासूं माथा-पच्ची ना करिया कर । थ्यावस राख । परमातमा सब ठीक करसी । उवांरो खेल निरालो है । उवां चूंच दी नै चुग्गो भी देयसी ।" कालिये री मा झरण झरण आंसूं टलकांवती चूलै कानी मुड़नै वोली—"कोरो डांडस आतमा में ढूकै कोयनी । चुगो रूलग्यो धूड़ में……तीली धूड़ पिराणहीन—इयरी कूख सूनो सूनी…निपजण सूं टलगी…… वांझ…।"

कालिये रै बापू रै काळजै नै मणचित्यां भावां रै भव रो काठ मारग्यो । उवांरै हिरदै री उगती फसल नै निरासा रो कातरो कुतरतो जावै है मन रै पानां पर हलवां सरकतो नरकतो……मणभाकर… ।

मोरिया रै गाड़े में डांगरा रो टोल पुचरिया नै लड़ावै । आप आप रै मूंडे में विखरेड़ी सूखी रोटयां रा टुकड़ा लुका'र ल्यावै अर पुचरिया नै

लियो अंधारो पसरयो पड्यो, छोरां नै कांई पड़ूत्तर देवै। चूकली री मा नै आज तीजो दिन है जापै में पड़यां। अजवाण रा मोया सुपना हुयग्या। एक वखत गुड़ रै बोलिये री विद नी बैठी। कियां बैठे ! घर में कुठला सूना हुया उबासी मारै। मोटयार तो काड़ाका काढ़ लेवै पण जचा रो कांई हवाल ! आज तो जावक निरहार–खाली पेट। मिनखपणो रूलग्यो। साबूत हाथ-पगां रै मिनख री करारी हार। कालजै री अणूती डोर तणी आ हीमत बांधी फकत सीरली रै तगरै उठावण री। मजबूरी रै घाघरै रो नाड़ो मरे मिनखां में खुलग्यो अर नागो हुयग्यो। उवांरी पत री वीरवानी सरम सूं हलाडोब हुयगी। इय सूं बेसी कांई मरण हुवै !

हुणतो एक 'र चेतो कियो अर बोल्यो—"टाबरो ! मैं नी ल्याओ। थानै वेम हुयो हुलो। बावलियो मैं तगरै रो कांई करतो।" हुणते री जीभ तालवै में खिचीजै। बोल सावल नी उपड़ै। सोनली हुणतै रै कांधै नै भच-भेड़ा देवतीं बोली—"कीं कर कूड़ो बोलै काका ! मेरी आंख्यां आगै तगरो उठायो।" टीगरां ओजूं हेलाल मारया–'सीपली रो तगरो दे काका, सीपली रो तगरो दे।'

भीतरी चुकली री मा ने रौलो सुणीज्यो। उवा स्याणी लुगाई ही। लामी सांस रेयगी। थाली में पूरस्येड़ो सीरै रो डोल, देख'र असल वात जाणगी। भठ छोरी रै हाथ धणी नै बुलवायो। हुणतै री फिरती लास भीतर पूगी। जचा बोली—"मेरो गोलो दुखै है। कीं चोखो नी लागै सो इयो सीरो बारै छोरां ने बांटद्यो। हुणतो भणेणो नी हो पण चुकली री मा रै चेहरै रो एक एक आखर बांचग्यो। हुणतो भाटो हुयग्यो। उवरी सूकी आंख्यां में कीं टोपा निचुड़ नै बारै निकल्या। एक भूचाल सो आयो—जीवण री आसरी वंभूलियो। हुणतो थाली लेयनै बारै पूग्यो अर बोल्यो–"ल्यो, टाबरियो ! कुत्ती नै सीरो पुरसो। तगरै में नी, कांसी री थाली में। तगरो फूटग्यो। थाल में जिमावो। जचा गावो।"

हुणतो पागल सो बरड़ातो गियो। आखर पोल री देली उनै गुड़ की जग्यो। टाबर तो परमहंस हुवै। खावै-पीवै अर रलो करै। पण हुणतै री पीड़ नै कुण पीवै ? उयो गुद परमहंस वणग्यो—सुख-दुख री चिन्त्यां सूं परै-धंधाग-वैराग""सांत।

लाच्छन राम जी 'डोकरी'

मोहन पुरोहित "त्यागी"

म्हूं सुणू हूं के सर्व गुण सम्पन्न भगवोन ईंज है पण जठे तक म्हारी
र रो सवाल है म्हूं तो आइज फूंना के केवणियां आ केन अपणी 'अणसमझी
सबूत दे रीयां है। हां आ बात खरी है के भगवोन सर्व गुण सम्पन्न है पण
ा किणी मे ईं होई नी सके या तो वे हीज लोग के सके जिणनूं इण
ातिक युग री महानतम बूंटो [विभूती] लाच्छन राम रो परिचे नी हुयो है।
; डंके री चोट ने ताली ठोक रे के सकूं हूं म्हारा बेली लाच्छन राम जी रो
ावान रे बाद दूजो नम्बर है। इणरी मोंनता बेलीपे रे कारण नी, भोंत
ांतीली खूबियों रे कारण मोंनू हूं जिणने ऐलो पेलो इये जमारे में तो क्या
लम मरण रे फन्दे में कई वार पड़र अर हरेक योनि रो हाल मुख जबोनी
ख कर वी पाय सके इमें मने तो वेम हीज है।

अठे म्हूं आपरी अगम भखण [भविष्य री जोणकारी] री कर्तबो री
ंणगी आपने पेश करूं हूं।

आप मगज रो अर्क निकालर आपरे खातर एक चोखी सी उपाधी भी
ाख ली है, इण मुजब आपरो पूरो नोम लाच्छन राम 'डोकरी' हुयो। कोरो
डोकरी' केणे सूं आप घणा पोमीजे है, भाडर डक गंडक खयड़ खूं जी

आपरा परम मित्र है। आप ऐड़ा ऐड़ा सिध्दान्त निकाले है जोणे सिध्दान्तां री परिपाटी आप सूं हीज शुरू हुई है। सभा में भाषण देवण रो आपने बणो कोड है पण जद आप बोलणो शुरू करो हो, जणे सुणणियां हँसणो शुरू करे है क्यूंके बोलतां बोलता मूंडो इण तरया बणायो हो जोणें कोई चिड़ियो चोंची करर मां खनू चुगो मोंगे है। श्रोता हँसे तो आप ने इंसूं कीं एतराज नीं क्यू. के आप श्रोता ने तो सरोता हीज समझो हो जिणरो कोंम कुट कुट किट किट करणो हीज व्हे है। आपरे विचारों सूं सभा में श्रोताओं रो महत्व नव सूं कमती हुया करे है। जे ऐड़ी नोबत आ जाय के हँसण सूं शुरू होयर श्रोता रोवण रींकण अर आपने स्टेजमाथू हटावण खातर भिड़ियोड़ा कोंदा अर टमाटर फेंकण लाग जावे जणे आप छेहलो वाक्य ने हेक सांस में केन लारली खिड़की सूं कूद घरे परा जावे। पूछणे पर बतावे के आ म्हारे ऊँचे व्यक्तित्व ने चोखो भाषण देवण री सेनोणी है।

हेक फेर। हेक सज्जन आपने जीमण खातर नेतरिया। पेल तो आप जावण खातर रजा नी दी पण हेकाहेक तुलसीदासजी री रामचरित मानस री आधो दूहो याद करन के 'कोंम करण ने आलसी भोजन में हुशियार' हुंकारो भरल्यो। गैरी सियालेरी रुत में बी आप मुलमुल रो चोलो ने पतली धोती पेरणो पसन्द करे है, गर्मी री रुत में गर्म पेण्ट शेरवानी अर ऐड़ा ई बीजा जाड़ा कपड़ा चल सके है। पूछणे पर बतावे है क इणसूं प्रकृति ने जीतण खातर बल मिले है। हरेक आ नीं कर सके, इण खातर आपने हेक विशेष मानवी मोने है।

जिण टैम जीमण हाल्या उण दिनों गर्मी री रुत ही। इण खातर आप गर्म कपड़ों में बगींगा ठणीया कीणी करोड़पति रे काके अर राजकुमार रे बाबूं कमती को नी समझता। इणी पोषक में आप भोजनालय में कोंकू रा पगलिया करया। सेंगो सूं पेला आप ओ पतो लगायो के इणी केई चीज री थोड़ी मांग होवे है अर कीई चीज बचारे बणियोड़ी है। थाने ठा पड़ी के मिठाई पुड़ी नाग मैंग मोकता है, थाल में भुजिया को कम दीसे है। पोणी इम सोमी भालियों तो ठा पड़ी के पोणी थोड़ोक है, पगाल हाल आई नी है। बस सर्व-गुण सम्पन्न ने उतरी जाणकारी को कमती है! थाली में को सेवों लेर दड़ी पर पटापट चार मोटा मोटा चांटे अड़िया अर भोजन सूं निरवाला होयर बगीर होवण हुता। म्हूं बी इण पार्टी में नतरोयोड़ो हो अर लोठरो जो

आसी, वो वी म्हारे ज्यूं वातों करसी, इणसूं वो भी विमार पड़ जासी अर वांरे चेलियों ने वांसू विमारी रो तमगो मिलसी। इण तरया ओ नेम चालू रैसी ने पूरो राष्ट्र हेक रोग शैया वण जासी। इण सिद्धान्त रे मुजव आप आपने राष्ट्र रो भारी परवीयों मोने है अर इण तरयां ही अणेक वीजा सिद्धान्तो खातर आपनो युग पुरुष मोंनता हुया विशु अपणीं विशुद्ध राष्ट्रीयता रो ढोल जगां जगा पीटता रंवे है। ऐड़ा इणांरे जीवण रे चोपड़े रे,खूणें खचूणें केई उदाहरण मिल सके हैं जिणसूं ठा पड़ सके के आपरो नम्बर भगवान सूं पेला नहीं तो पछे वो न हो सके, आप वी उणरा सम कक्ष हो। जद कदेई भलेई मने आपरे जीवण माथे कलम वेवावण रो मौको लादो तो आपरी जीवण रा अजीव चुटकला पेश करों ला।

टावरियां नैं ठाडा भोला दीजै म्हारी माय

नृसिंहराज पुरोहित

पात्र—१. काकी सा
२. पटेलण जी
३. डाक्टर सा'ब

पटेलण—(एक दम तेज सुर में) अर र र र र ! अर र र र र ! अर र र र ऽ ऽ ऽ ! उई रे ! (चालती-चालती पग पकड़ नें बैठ जावै)

काकीसा—कांई व्हैग्यो पटेलण जी ?

पटेलण—अर र र र र ! उई रे ! मरगी ओ काकीसा म्हूं तो ! हे रामजी।

काकीसा—अर कीं बतावो तो खरी भलां मिनखां। यूं कांई टावरां री गळाई हाय वोय करो हो !

पटेलण—पग में सीलो चुभग्यो ओ काकीसा ! देखो कोनीं पगरै कन्नै लोही रो नाळो बहीजग्यो है। म्हारै तो जीवरी पड़ी है अर थांनै टावरां रै ज्यूं हाय वोय नजर आवै।

काकीसा—अरे राम रे ! थारै पग कांनी तो इतरी जेज म्हैं देखी ई कोनीं, बाई ओ ! हे भगवान लेण रै कितरो लोही निकलग्यो ?

पटेलण—आज दिनूंगै उठतांई किण दुस्टरो मूंडो देख्यो ओ काकीसा, सो राजा करण री वेला पग में खीलो बैठग्यो।

काकीसा—'लागै जिणरै चखरै अर दुखै जिणरै पीड़', मिनख डावड़ा इतरोई ध्यान नीं राखै के खीला खांपा एकांत में नाखणा। यूं नीं जाणै के कोई रे पग में बैठ जावैला। अर थांई पटेलण जी आकास रा तारा गिणता इज चालो थोड़ो नीचो देखनें चाल्या करो। भले मिनख कह्यो है—नीचो जोयां गुण घणा,

जीव जंत टल जाय।

कांटो पण भागै नहीं, पड़ी वस्तु मिल जाय।

पटेलण—ए सगली कैवण री वातां है काकीसा, उई रे!········राम रे! मरगी रे म्हैं तो!··········जोग व्हे जिको कोनी टलै।

काकीसा—लो अब उठो। म्हारै खांधा रै हाथ राखनें धीरे धीरे चालो देखांणी गांम में आज डाक्टर सात्र आयोड़ा है, चालो थांरै पट्टी बंधाय दूं।

पटेलण—काकीसा, थैं नीं मिलता तो म्हारी भूंडी हालत व्हेती। भगवान थांरै भलो करजो बाई। म्हारी आसीस सूं दूधां न्हावो, पूतां फलो अर करोड़ दीवालो राज्य करो, एक रा इक्कीस व्हो।

काकीसा—(हंसनें) लो, अब उठो तो खरी।

पटेलण—ओह! ओह! अरे राम रे! उई रे!

काकीसा—धीरे.पटेलण जी धीरे! म्हारो खांधो काठो पकड़ लो। अरे हां म्हूं थांनें आ वात तो पूछणी भूल इज गी के के थें दिनूंगै ई दिनूंगै जावै कठै हा?

पटेलण—कठै कांई काकीसा, म्हारै माथै तो अबार भगवान ई रूठोड़ा है। घर में बौहलो कुणवो ठेर्‌यो सो इतरा मिनखां में एकाध तो हर वखत बिमार रैवै इज। दो एक दिनां पे'ली मोटोड़ो छोरो मांदीवाड़ में सूं उठनें हरतो फिरतो व्हियो इज हो के नेंनकिया नें

माताजी तपग्या । तीन दिनां सूँ वापसी आज देखाली दियौ है । दरवाजा आगै हल अर गोमूत घर नें वन्नर माल वणावण नें गधेड़ा री लीद अर नींवड़ा रा पत्ता लावण नें जावती ही के म्हारै वैरी इण खीलै घटता में पूरो कर दियौ ।

काकीसा—पटेलण जी आ तो घणी दुख री वात वताई। पण चेचक तो एक बिमारी है । इण नें देवी देवता रो रूप देवणो कोई समझदारी नीं है । जिण भांत हरेक वात वालियां सूँ वलै अर टालियां सूं टलै उणीज तरै आ मातारी वीमारी पण टालियां सूं टल सकै ।

पटेलण —थांनें हाथ जोड़ूँ काकीसा म्हारै मूँडागै तो माताजी महाराज री निंदा करो मती । हे मा ! म्हारै छोटकियै नें ठाडो झोलो दीजे म्हारी माय ! सील सातम रै दिन ठेठ थांन माथै आयनें माजी नें सवा पांच रो प्रसाद चढ़ाय दूँला ।

काकीसा—प्रसाद वाली वात तो म्हनें ई दाय आई पटेलण जी ! उण दिन म्हनें भूलजो मती ना ।

पटेलण —(खांधो पकड़नें धीरे-धीरे चालती थकी) ओह ! ओह ! उई रे !

काकीसा —धीरै चालो सा धीरै ! कहो तो पटेलजी नें बुलाय दूँ । वे थानें ढो माथै बिठाय नें ले चालैला ।

पटेलण —करलो मसखरियां काकीसा, धाप-धाप नें करलो । इसो मौको फेर नीं आवैला ।

काकीसा—लो, वे देखो रावली चोकी माथै डाक्टर साव एकला इज वैठा दीसै । चालो जल्दी-जल्दी चालो, पछै फेर भीड़ व्है जाएला ।

पटेलण —चालो बाई चालो ।

काकीसा—राम-राम डाक्टर सा'व !

डाक्टर —राम-राम सा राम-राम ! पधारो । इण मा सा रै पग रै कांई व्हैग्यो ?

काकीसा—पटेलणजी रै पग में तो खीलो बैठग्यो डाक्टर सा'ब !

डाक्टर —आओ बैठो पटेलण जी, अबार पट्टी बांध दूं । (घाव देखनैं) मामूली घाव है, कोई चिन्ता जिसी बात कोनीं । दो एक दिन में घाव भरीज जावैलो ।

(डाक्टर दवाई लगाय ने पट्टी बांवै)

पटेलण —ओह ! ओह ! अरे राम रे उई रे !

डाक्टर —बस, बस, बस लो आ पट्टी बांध नाखी ।

पटेलण —(निस्कारो नांख नें हाथ जोड़ती थकी) जुग जुग जीवो डाक्टर वीरा, जुग जुग जीवो । वड़ ज्यूं फलो अर दोब ज्यूं पांगरो । एक रा इक्कीस व्हो ।

डॉक्टर—(जोर-जोर सूं हँसै, काकीसा ई हँसै) बस बस पटेलण जी, इतरी आसीस घणी, देस में जनसंख्या पे'लाई मोकली है । एक रै इक्कीस इक्कीस व्हैग्या तो खावैला कांई ?

काकीसा—डॉक्टर सा'ब पटेलणजी रे छोटकिये बेटै नै माताजी निकलग्या है ।

डॉक्टर— हां भाई, आ तो चिंता री बात है । आज थांरै गांम में घर घर टाबर सूता है । अडोस पडोस रा गांमड़ां में ई चेचक रो घणो जोर है, अर इण में घणो कसूर लुगायां रो है ।

पटेलण— लुगायां रो कसूर कांई है डॉक्टर सा'ब ?

डॉक्टर— गांम में चेचक रो टीको लगावण वालो आवै जद थे टाबरां नैं लुकाय लो, अर टीको लगावण नीं देवो । पछै जद टाबरां नें चेचक निकलै तो वांरी सार-सँभाल ठीक कोनीं करो । इण सूं चेचक सगला गांम में फैल जावै ।

काकीसा लो सुण्यो पटेलण जी ! अबै म्हारी बात याद करो ! म्हैं थांनें नीं कह्यो हो के सगला टाबरां रै टीको लगवाय लो । थे मान्या कोनीं अर कैवण लाग्या-ना ए बाई टाबरां रै पीड़ व्है जावै । माताजी महाराज नाराज व्है जावै।

डॉक्टर— थे बैठो पटेलणजी, म्हारी बात ध्यान सूं सुणो ! थेई बैठ जाओ काकीसा (दोनूं जण्यां बैठ जावै) अरे भाई किसा माताजी अर किसा पिताजी ! चेचक तो एक बिमारी है अर टीका सूंई कदेई पीड़ हुई है ? पीड़ तो चेचक निकलै जद हुवै । कई टाबर कडोपा व्है जावै, कई कांणा व्है जावै तो कई आंधा व्है जावै अर कई तो मर जावै । थां सूं कांई छांनी बात है ?

काकीसा—साची फरमावो डॉक्र सा'ब !

डॉक्टर — इण वास्तै सगळां नें ई सालो साल चेचक रो टीको जरूर लगवाय लेवणो चाहिजे । टीको लगवायां सूं पे'लो बात तो चेचक निकलै इज नीं । अर जे निकलै तो मामूली दांणा निकल नें रैय जावै । बाकी नीं तो चेचक सीतला माता रा गीत गायां सूं रुकै, नीं पूजा पाठ कियां सूं अर नीं ठाडो ठरियो खायां सूं ।

काकीसा—जुग जुग सूं गांमड़ां में तो गीत गवीजै—

> अंगद् थैया करै ओ मैया सीतला अर
> म्हांरै टाबरियां नें ठाडा झोला दीजै म्हारी माय ।

फर सालो साल चैत महीनें माता पूजी जावै अर एक दिन ठंडो बासी खावो जावै । जे इण बातां सूं चेचक रुक जावती तो कदेई रुक जावती ।

डॉक्टर — दूजी बात जे घर में कदाच कोई नें माता निकल इज जावै तो पछै उणरो पूरो जाब्तो राखणो चाहिजे । चेचक एक चेपी रोग

है. ओ एक सूं दूजा नें लाग जावै । ओ इज कारण है के ओ रोग फैले जद घणी जोर सूं फैले । गांमरा गांम तत्राह करदे ।

पटेलण— लारला महीना में गांम में सूं पचास साठ टाबर जावता रह्या डॉक्टर सा'ब !

डॉक्टर— इण वास्तै इज म्हूं थांनें कैवूं पटेलणजी के पाणी पोनी पाल बांधणी चाहिजै । नीं तो झाली झाल लाग्यां पाछै कोई कारी नीं लागै । चेचक रा रोगी नें घर में इसी ठौड़ एकांत में राखणी चाहिजै के जठै घणी हरफिरनी हुवै । उणरा कपड़ा चर बरतन न्यारा राखणा चाहिजै । खासकरनें जिण वखत वण सूखण लागै अर टिकड़ियां खिरण लागै, उण वखत रोग फैलण रो ज्यादा डर रैवै । इण वास्तै टाबरां नें रोगी सूं आगा राखणा चाहिजै ।

काकीसा— सुण्यो पटेलणजी ! दरवाजा आगै हल आडो नांख्यां सूं अर मींगणां री माला टरयां सूं कीं नीं हुवणी है । डॉक्टर सा'ब कही जिण वातां रो पूरो ध्यान राखजो ।

पटेलण— वात तो ठीक है काकीसा ! म्हूं तो इतरा दिन सफा अंधारा में इज ही ।

डॉक्टर—खैर अबै भूल्या जठा सूं ई गिणो, कैवै के "भोतो" मोड़ो लायो के खावै तो हाल वेगो इज है ।' सो अबै सूं इज ध्यान राखो । गांमरी सगली मायां बायां नें समझाय दो के सगला टाबरां रै टीका लगवाय ले ।

काकीसा—वाह डॉक्टर सा'ब वाह ! आज तो जबरी वातां बताई । कियां पटेलणजी, थांरै कीं हीयै ढूकी के नीं ?

पटेलण—काकीसा कांई बतावूं, म्हारी तो आज आंख्यां ऊधड़गी । डॉक्टर सा' बरी वातां तो म्हारै अंगो अंग लागी ।

डॉक्टर— तो थे अबै घरै जावो । म्हूं थोड़ी देर में थांरै टाबर नें देखण नें आवूंला ।

पटेलण— जुग-जुग जीवो डॉक्टर वीरा, जुग-जुग जीवो । वड़ ज्यूं फलो, दोब ज्यूं पांगरो, एक रा इक्कीस हुवो !

डॉक्टर— (जोर सूं हंसे)

(पड़दो पड़ै)

हर की पेड़ी पर

राधाकृष्ण शर्मा

सेठ—नारायण, नारायण, नारायण ! कुम्भले री मां ! देख, आ है हर की पेड़ी ! भगवान रामचिन्दरजी अठै ही दिशरथजी रा फूल तिराया हा ! आज आपणूं जमारो भी सुधरग्यो।

सेठानी —कुम्भले रा बापूजी ! कांई फूल तिरायां बिना ही जमारो सुधरग्यो के ?

सेठ—ए बावली तूं समझी कोन्यां। फूल किस्या इब जींवता ही तिरावां—कोई हाथ घालर तो मरीजे कोन्यां अर इंयाही थारी मरजी हुवे जणा स लै मैं तने गलगोतो द्यूं और तूं मने दे जिको च्यार मिनटां में पापो कट ज्याग। मरेड़ा का फूल तो से ही बुआवे है। आपां जीवतां ही बुआद्यां "गुड़ लागे न फिटकरी रंग आवे चोखो"।

सेठाणी—ना ना कुम्भले रा बापूजी। थारी अकल कठै भैंस चरने लागगी के। हाल आपणे लारे कांई कोन्या—कुम्भलो है, कुम्भले की बीनणी है, ब्यां रां टाबर टोली है। सै आपांने चोखी तिरयां पुंच्यासी। आपां क्यूं उंतावल करां।

सेठ—अछ्या जणां कुम्भले री मां जियां थारी मरजी।

ज्योतषी—दया धरम रो मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये, जब लगि घट में प्राण।
अंगी चोली देगी दान, आप करना प्रभु गंगा स्नान, जय गंगा ॥
आपको धरम पुन्न बढ़सी सेठजी—कोई भूखा नंगा नै कपड़ो लतो,

आनू पावलो दिरावो—हर की पेड़ी पर खड़्या हां। म्हे ही मारवाड़ का ज्योतषी हां।

सेठ—जा जा बाबा ! म्हे किस्या धरम पुन्न करने आया हां। म्हारे गेल मत पड़ ना। अठै सदावरत बंटे है, बठै जा ना। हर की पेड़ी पर खड़्या हां तो म्हारे पगां पर खड़्या हां, तनै कांइ जोर आवे है।

ज्योतषी—वाह वाह सेठजी ! आच्छो मन मीठो कर्‌यो। तीरथां पर आकर अर्थान की बातां कोन्यां कर्‌या करे है।

सेठ—म्हाने मत उपदेश दे ना। थारो गेलो लै बाबा ! देख कून्नले री मां।

सेठानी—हुन्ने कून्नले रा बापूजी।

चनेवाला (आता है)—बन्दर मच्छी के लिए चने ले जाइये चने।

सेठ—देख कून्नले री मां ! आंका कयां भोगना किस्त लाया हैं। आजकाल तो मिनखां नै ही चीणा कोन्यां मिलै। चीणी की तो बात ही और है। आनै हिया का फूट्या नै बन्दर मच्छी सूझे है। कुण केव आनै ! कोई कुवे में ही भांग पड़गी।

सेठानी—हुन्ने कून्नले रा बापूजी।

हरिद्वार का पण्डा—सेठ और माई ! यह हरिदुआर की जल की झारी है जिसमें गंगोत्री जमनोत्री का पवित्र जल भरा है। चार धाम में श्रेष्ठ रामेश्वर जाकर भगवान शंकर पर चढ़ाने से प्राणी बैकुण्ठ धाम को जाता है। एक संकल्प चार आने का लीजिये। हर की पेड़ी पर स्नान करने आये हैं।

सेठ—देख कून्नले री मां। कठै तो रामेसर और कठै हरिदुआर। ओ बापड़ो बठै जार पाणी चढासी। मनै ही ठोका चराये है। पावल्यां किसी गेला में उगे है। एक धरी तांई गिड़ो तपावां जणा कोई एक पावली को हिसाब-किताब बेठ है। कोन्यां चाहिजे बाबा, थारो गेलो लै।

बंगाली भिखारी—सेठ एक पोयसा मानां के ओ देन ! आमी खुब दुखी लोक। एक टू दोही दिन आहार शोन कोरे। आमी आलाम देखे आसछी। आमार छेले पुले शोब मारे गिये छे। आमार भोगोवान भालो कोरबे।

सेठ—भाले·हूं किस्यो इव म्हारो माथो फोड़सी के ? कोई जबरदस्ती है ? कोन्यां देवां पड़स्यो कोन्यां देवां । किसे किसे को मन राखां। उणिहारा हूं संसार भर्‌यो है। नुंई नुंई खोपड़यां आवे है नुंई नुंई देख कूम्भले री मां।

सेठाणी—हम्मे कूम्भले रा बापूजी।

भोपा—(नाचता हुआ आता है)।

नाम रहेगा उन्हीं का जो नर, धरम में धन को लायेगा।
पैसे का कजूस जगत में, जोड़ जोड़ मर जावेगा।
हाथ मे अपने खाया न खरचा, अगर जमा जर किया तो क्या।
ऐसा मक्खीचूस आदमी, अगर सौ बरस जिया तो क्या ?
यहा से अपयश लेकर, वह नर जम की मार वहां खायेगा।

सेठ—देख कूम्भले री मां ! आहू को सांड दड़के जियां दड़के। आं गोदां उं कुण माथो लगावे। च्यारां कानी काल का ही काल का टूंटड़ा नजर आवे है। मंगतपणे को ही कोई सूमार है ! तीरथां में आच्छो भेलवाड़ो कर्‌यो। ए तो इं हर की पेडी ने आपके घर की पेडी समझ राखी है घर की पेडी। चाल चाल कठे ही मूंडो लकोर बैठां ! मैं सिमझग्यो। आं सगलां री निजर म्हांकाली अंटी पर अटक री है।

सेठानी— हम्मे कूम्भलै रा बापूजी, हम्मे कूम्भलै रा बापूजी। चालो; चालो।

(पटाक्षेप)

लेखक

अजीतसिंह 'बन्धु', रा० उ० मा० वि०, लूनी, जोधपुर;

अमोलकचन्द जांगीड़, रा० उ० मा० वि०, बिसाऊ, झुंझुनू;

ओम अरोड़ा, आर्य हायर सेकण्डरी स्कूल, गंगानगर;

करणीदान बारहट, रा० उ० मा० वि०, झुंझुनू;

कुन्दनसिंह सजल, रा० मा० वि०, गुरारा, सीकर;

गोपाल राजस्थानी, उमेदपुरा, फलोदी, जोधपुर;

चतुर कोठारी, राजसमंद, उदयपुर;

नन्दन चतुर्वेदी, रा० उ० मा० वि०, गुमानपुरा, कोटा;

नाथूलाल गुप्त, रा० उ० मा० वि०, छीपा बड़ौद, कोटा;

नृसिंह राजपुरोहित,

वंशी बावरा, रा० मा० बा० वि०, छोटी सादड़ी, चित्तौड़;

भगवतीलाल व्यास, विद्याभवन उ० मा० वि०, उदयपुर;

भँवरसिंह सहवाल, रा० शि० प्र० वि०, मसूदा, अजमेर;

महावीर प्रसाद शर्मा 'जोशी', रा० प्रा० वि०, गोरीर,
वाया खेतड़ी, झुंझुनू;

मीठालाल खत्री, रा० उ० प्रा० वि०, तवाव, जालोर;

मोहनलाल 'त्यागी', रा० उ० प्रा० वि०, उमेदपुरा, फलोदी, जोधपुर;

मोहनसिंह, रा० उ० मा० वि०, झुंझुनू;

रघुनाथसिंह, पीरामल उ० मा० वि०, बगड़, झुंझुनू;

राधाकृष्ण शर्मा, सरस्वती शिशु मंदिर उ० प्रा० वि०,
१२ विनोबा बस्ती गंगानगर;

रामसहाय विजयवर्गीय, विजयवर्गीय मोहल्ला
पास, केकड़ी, अजमे

रामस्वरूप 'परेश', वी० एल० प्रा० वि०, द

रामेश्वर दयाल श्रीमाली, रा० उ० प्रा० वि

विश्वम्भर प्रसाद शर्मा, विवेक कुटीर, सुजान

सांवर दइया, द्वारा कानीराम सागरमल, दया
